केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ जनवरी - अप्रैल २०१४ अंक, वर्ष २०, नं ६५, लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

कवीन्द्र रवीन्द्र - विशेषांक

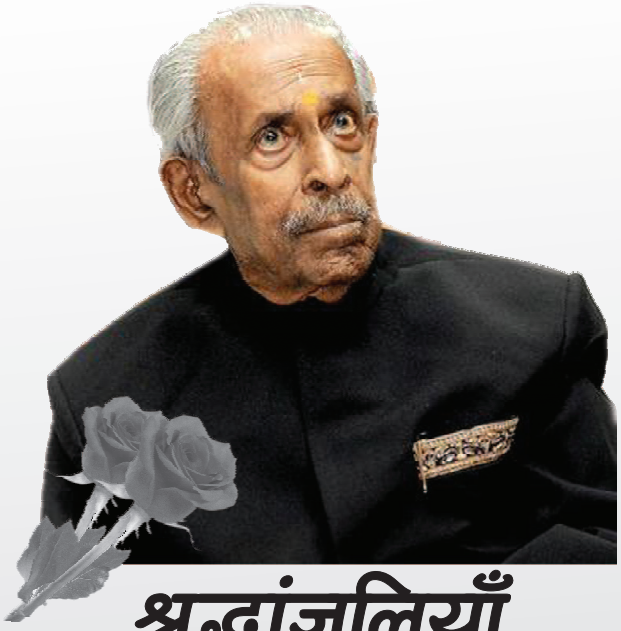

श्रद्धांजलियाँ

अभिनन्दन - शुभकामनाएं!!

अपने सपने साकार करें

आवास ऋण

कार ऋण

स्वर्ण ऋण

▸ कम ब्याज ▸ सुगम ▸ ओवरड्राफ्ट के रूप में ऋण ▸ दीर्घावधि

SBT

विश्वास की दीर्घ परम्परा

स्टेट बैंक ऑफ़ त्रावणकोर

Toll-free No. 1800 425 5566 www.statebankoftravancore.com

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका

२ जनवरी - अप्रेल २०१४ अंक, वर्ष २०, नं ६५ लक्ष्मीनगर, पट्टम पालस, तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४

सम्पादक

डा० एन० चन्द्रशेखर नायर

संरक्षक

श्रीमती शांता बाई (बेंगलोर)
श्री. डी.शशांकन नायर
श्रीमती कमला पद्मगिरीश्वरन
डा० वीरेन्द्र शर्मा (दिल्ली)
डा० अमर सिंह वधान (पंजाब)
श्री. हरिहरलाल श्रीवास्तव (काशी)
श्रीमती के. तुलसी देवी (चेन्नै)
श्रीमती रजनीसिंह
डा. मिनी सामुवल
डा. सविता प्रमोद

परामर्श-मण्डल

डा० एस.तंकमणि अम्मा
डा० मणिकण्डन नायर
डा० पी.लता
श्रीमती आर. राजपुष्पम
श्रीमती श्रीदेवी एस.
श्रीमती एल. कौसल्या अम्माल
श्रीमती रमा उण्णित्तान

सम्पादकीय कार्यालय

श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
पट्टम पालस पोस्ट
तिरुवनन्तपुरम-६९५ ००४
दूरभाष-०४७१-२५४१३५५

प्रकाशकीय कार्यालय

मुद्रित : (द्वारा)
श्रीनिकेतन, लक्ष्मीनगर,
तिरुवनन्तपुरम - ६९५ ००४
मूल्य-एक प्रतिः २०.०० रुपये
आजीवन सदस्यता : १०००.००
संरक्षक : २०००.००

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका कहाँ कहाँ जाती है?

कन्याकुमारी, मैसूर-२, महाराष्ट्रा, मणिपुर, मद्रास-६, कलक्कता-२, नई दिल्ली (अनेक स्थान), गुन्डूर, त्रिवेन्द्रम (अनेक जगहें), बागपत (यु.पी.) उन्नाव (उ.प्र.), बिलासपुर (म.प्र.), गुंतकल, जबलपुर, इलहाबाद, अहमदाबाद, बिरखडी, जमशेदपुर, लातूर, हैदराबाद, रतलाम, देवरिया, गाजियाबाद, इम्फाल, चुडीबाज़ार, पीली भीत, फिरोजाबाद, अम्बाला, लखनऊ, बलांगीर, बिहार, पटना, गया, बांका, ग्वालियर, भगलपुर, देवधर, जयपुर, बनारस, तृशूर, आलप्पुषा, मेरठ केन्ट, कानपुर, उज्जैन, पानीपत, होरंगाबाद, सीतामठी पोस्ट, प्रतापगढ, सरगुजा, बिजनौर, भीलवाडा, सतना, रेलमंत्रालय, तिरुवल्ला, वर्कला, कोट्टयम, नई माही, ओट्टप्पालम, चेप्पाड, लक्किडि, नेय्याट्टिनकरा, कोषिकोड, पय्यन्नूर, कोल्लम, मान्नार, मंगलोर, पुरनपुर, पंजाब, विशाखपटनम

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय नई दिल्ली द्वारा निर्देशित जगहें :

तमिल नाडुः- अरुम्बाक्कम, तोरापक्काओ, मद्रास, चेन्नै-३२, क्रोमोपेट्टा, चेन्नै-२१, चेन्नै-२, चेन्नै-८, कान्चीपुरम, तिरुचिरापल्ली, तिरुचिरापल्ली-२, नोर्त अरकोट, ताम्बरम, कोयम्बतूर, सेलम, सेलम-२६, चेन्नै-३४, चेन्नै-२४, तिरुचिरापल्ली-२, चेन्नै-३०, कोयम्बतूर-४, चेन्नै-२८, चेन्नै-८६। **गुजरातः-** अहमदाबाद, बरोडा। **कर्नाटकः-** बांगलोर, चित्रदुर्ग, श्रीनिगेरी, मौंगलोर, मैसूर, हस्सन, मान्डीया, चिगमौंगलोर, षिमोगा, तुमकूर, कोलार। **महाराष्ट्राः- मुम्बई,** कोलाबा-मुम्बई, मुम्बई-२०२, माटुंगा, मुम्बई-८, मुम्बई-८६, अन्देरी-६९, मुम्बई-२६, मुम्बई-८७, मुम्बई-२, औरंडगाबाद-३, औरंडगाबाद-२, औरंडगाबाद-१, नागपुर, रामटाक-नागपुर, सताना, नन्दगौन-नासिक, पूना, पूना-१, पूना-४, मानमाड-नासिक, चन्द्रपुर, अमरावती, कन्डहार, कोलहापुर, बानडरा, अकोला, नासिक, अहमदनगर, जलगौन, दुलिया, सांगली-कोलहापुर, षोलापुर, सतारा, सान्ताक्रूस, बारसी-४१३, माटुंगा, संगली-४१६। **वेस्ट बंगालः-** कलक्कता। **हैदराबादः-** सुल्तान बाज़ार। **गौहाटीः-** कानपुरा। **नई दिल्लीः-** आर, के पुरम। गोवाः- मपुसा-५०७।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। संपादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं हैं। सम्पादक

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध-पत्रिका केरल विश्व विद्यालय से अनुमोदित पत्रिकाओं की सूची में शामिल की गयी है। (संपादक)

www.hindisahityaacademy.com

सम्पादकीय

भारत महासाम्राज्य के नवीन प्रधान मंत्री श्री. नरेन्द्र मोदी जी को 'केरल हिन्दी साहित्य अकादमी' की ओर से भेजा गया पत्र।

परम आदरणीय प्रधान मंत्री श्री. नरेन्द्र मोदी जी को विशेष रूप से प्रणाम!

महात्मन! सन् २०१४ के भारत चुनाव में आप आश्चर्यजनक रीति से बहुमत प्राप्त कर चुके हैं। केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की ओर से आपको हार्दिक बधाइयाँ! भारत के चुनाव के इतिहास में आपकी विजय कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण एवं आश्चर्य-जनक है। वस्तुतः आपने भारत की आर्ष संस्कृति को उननीत कर दिया है।

आपसे हमारी और भारत की जनता की आशा है कि भारत की अपनी राजभाषा को उसके उचित पद से अलंकृत कर दें। अनेक वर्षों से भारतीय जनता राजभाषा के असंतुलित उधेड़बुन में पड़ी हुई है। आज हिन्दी भाषा के साथ अंग्रेज़ी भी हमसी राजभाषा के तौर पर काम में आती है। यह सन् १९६५ में पंडित नेहरूजी द्वारा मान्यता प्राप्त एक नियम के आधार पर है। महान राष्ट्रनायक पंडित जी ने सोचा था कि भविष्य में हिन्दी को, अंग्रेज़ी छोड़ कर भी अपनाया जाऐगा। लेकिन अभी तक बेचारी हिन्दी अपने स्थान केलिए अपमानित होते हुए दम घुटती आ रही है। आज आपकी कृपा से एकपक्षीय शासन का अवसर तो मिल गया है। वस्तुतः देश और राजभाषा के सौभाग्य से ऐसा अवसर आ गया है। इस अवसर का समुचित उपयोग हमें करना है। भाषा नीति के विरुद्ध रहनेवाले छोटे-छोटे देशों के प्रति हम आज बाध्य नहीं हैं। अब आगे अपने देश की भाषा के नाम पर अन्यत्र बड़े-बड़े राष्ट्रों के सम्मुख हमें उपहास स्वीकार करना न पड़े। जैसे श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित जी को रूस के स्टालिन के सामने झुकना पड़ा है।

यह एक सुन्दर अवसर है कि भारतीय शासन को अपनी भाषा के नाम उचित स्थान देने में कोई हीला-हवाला न करना पड़ा है। आदरणीय प्रधान मंत्री जी से हमारी यही आशा है कि वे राजभाषा संबंधी अडचनें दूर करने की कारवायी करें।

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर

पाठकीय प्रतिक्रिया

सम्पादकजी, 9-8-13

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी की शोध पत्रिका का अंक ५९ (२ जनवरी २०१२) प्राप्त हुआ, धन्यवाद! आपका सम्पादकीय पढ़ा। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि केरल हिन्दी प्रचार सभा अपना हीरक जयन्ती वर्ष मना रही है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार में केरल ने सदैव राह दिखाई है। गंगा दशहरापर्व के अवसर पर बद्री नारायण तिवारी का लेख 'मुस्लिम विद्वानों की दृष्टि में गंगा मइया' लेख अच्छा लगा। गंगा जीवन दायनी है। जल के लिए वह किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करती। डॉ. नायर जी की कविता 'मैं हिन्दी हूँ' उनकी भावनाओं को प्रकट करती है। डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर के रचना संसार पर लेख अच्छे लगे। डॉ.नायर ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

शुभकामनाओं सहित, भवदीया। **डॉ. श्रीमती निर्मल सिंह्ल, शाखा प्रधान, केन्द्रीय सचिवालय, हिन्दी परिषद, भारतीय रिज़र्व बैंक शाखा, ६, संसद मार्ग, नई दिल्ली-११०००१**

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित अंक प्राप्त हुआ। (केरल हिन्दी साहित्य अकादमी शोध दि. २ जनवरी २०१२ पत्रिका)। केरल हिन्दी प्रचार सभा हीरक जयन्ती समारोह मना रही है। यह पढ़ा। फिर भी उत्तर भारतीयों के मन में यह बात जमी हुई है कि दक्षिण भारत के चार प्रान्त - तमिलनाडु, आन्ध्राप्रदेश, केरल और कर्नाटक में हिन्दी के प्रति स्नेह भावना नहीं है। यह भ्रमदूर करने का एकमेव उपाय यह होगा कि इन चारों राज्यों में हिन्दी में प्रकाशित साहित्य की विपुल प्रतियाँ उत्तर भारतीय साहित्यिक संस्थाओं को निरन्तर प्रेषित की जाती रहे। भारत में हिन्दी भाषा और साहित्य इस तरह पनप रहा है यह जानकर वे अपनी सोच बदलने पर विवश होंगे। आपकी शोध पत्रिका तो नई दिल्ली, बागपत, उन्नाव जैसे उत्तर प्रदेशों के नगरों में मध्यप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, पंजाब में भी जाती है। इसी प्रकार से अन्य प्रकाशित साहित्य भी भेजा जाता रहा तो अच्छा होगा। भवदीय, **मनोहर धरफले, १७३, साकेत नगर, इन्दौर**

आदरेय, डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर, 28-5-2013

आपकी संपादित पत्रिका हस्तगत। लक्षबार बधाई। आप साहित्यसेवी संपादक हैं और एक अर्से से इस पत्रिका का भाषा सेतु सुधी संपादन करते आ रहे हैं। मुझे समग्र भाषा समूह (देशीय-विदेशी) प्रिय है सभी की मधुमीठी रसरसरी, उनके बोल अंतस को दूत हैं। संपादक साहित्यकार भी हो, यह दुर्लभ है। पर जो हैं लेखन क्षेत्र के लिए वे अधिक प्रभावी हैं। दो जुलाई दो हज़ार बारह वाला अंक पिछले अनेक वर्षों का आपका तपस्चर्या फल मिला जो आपकी निर्निमेष जाग्रत जिजीविषा का द्योतक है।

सधन्यवाद, आपका, **बैनीकृष्ण शर्मा, संस्थापक/संचालक, 'अंजुरि' वैचारिक पत्रिका**

मान्य संपादकजी, 20-3-2013

महोदय से सस्नेह नमस्ते। आपका दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार कार्य महत्वपूर्ण है। आप सफलता की भावना से कार्यरत हैं। अहिन्दी क्षेत्र में हिन्दी प्रचार कठीन होता है। शोधपत्रिका प्रकाशीत कर पाठकों तक संपादित रहने की प्रक्रिया भी प्रशंसनीय रही। माननिय हिन्दी प्रचार प्रसार में कर्मरत हमारा समुह विश्व हिन्दी सचिवालय मॉरिशस को कुछ पुस्तकें एवं अन्य सामग्री भेट फरने हेतु सकिय है। कृपया इस हेतु अपने प्रकाशीत पुस्तकें एवं ग्रंथों का एक सेट बिना मूल्य भेजने की कृपाकरें। तथा मासिक पत्तीक शोधपत्रिका का अंक हमेशा बिना मूल्य भेजने की कृपा करें। जिसका उपयोग हिन्दी प्रचार में होगा।

कृपया विनंती मान्य हो, धन्यवाद। भवदिय,

पंजाब कल्याणकर देशमुख, राजोई एनकसेन्ह, वामणनगर, नांदोड-४३१६०५, मो:२०१३१२२०१३

माननीय महोदय, सादर अभिवन्दन, 03-5-2014

कृपया पत्रिका की प्रति भिजवाने का कस्ट करें रचनाएं भेज सकूँ। साथ ही केरल सहित्य अकादमी द्वारा दिए जाने पाले पुरस्कारों का पूरा विवरण भी भिजवाने की ही कृपा करें ताकि प्रविष्टि भेज सकूँ। उस हेतु क्षमा।

भवदीय, **श्रीमती वन्दना सकसेना, एम.ए. (१) सरस्वती नगर, भॉपाल (४६२००३) (मध्यप्रशेश)**

महर्षि वाल्मीकि

डॉ.जयशंकर शुक्ल,
कवि एवं साहित्यकार,
पथ सं.०६,
दिल्ली-११००९३

प्रथम काव्य के सर्जन कर्ता
तुमको मेरा प्रणाम है
छन्द शास्त्र के प्रस्तुत कर्ता,
बारम्बार प्रणाम है।।

तप बल से पायी दिव्य दृष्टि,
सम्भव है जिससे कृपा वृष्टि,
संसृति के अविरल प्रवाह से,
आप्लावित करते पूर्ण सृष्टि,
चिर समाधि में पहने वाले,
तमसा तट पर धाम है।
प्रथम काव्य के प्रस्तुत कर्ता,
तुमको मेरा प्रणाम है।।

जीवन में उत्पात बहुत था,
मानस में संघात अधिक था,
चित मलिन कल्मष से होकर,
वृत्ति विकृत, संताप बहुत था,
पीड़ा से अर्थ बनाने के
थे उद्योगी, सरनाम हैं।
प्रथम काव्य के प्रस्तुत कर्ता,
तुमको मेरा प्रणाम है।।

पुन्य उगे पूरब जन्मों के,
जगे ध्यान अब के कर्मों के,
देव ऋषि से निर्देषित हो,
सम दृश्य हुए अपने मर्मों के,
स्वजनों को सुख देने वाले,
ख्यात हुए, निष्काम है।
प्रथम काव्य के प्रस्तुत कर्ता,
तुमको मेरा प्रणाम है।।

वाहक बन गए ऐसे तप के,
मानक बन गए कैसे जप के,
मारा-मरा का सुमिरन करके,
ब्रह्म समान हुए इस जग के,
पिपीलिका गृह बनने वाले,
वाल्मीकि अब नाम है।
प्रथम काव्य के प्रस्तुत कर्ता,
तुमको मेरा प्रणाम है।। •

हमें आगे बढ़ना है

प्रा. डॉ.पंडित बन्ने,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, भारत महाविद्यालय, जेउर (म.रेल), तह-करमाला जि.सौलापुर (महाराष्ट्र) मो. 09657240554

उठो सपूतो उठो
हमें आगे बढ़ना है
रुकना नहीं है
जब तक अपना लक्ष पूर्ण नहीं होता
तब तक रुकना नहीं है।

मंजिल पाना है तो रुकना नहीं
जीवन एक रास्ता है
रास्ते में नदी, पर्वत, वन, गुफा,
काँटे गड्डे होते हैं,
फिर भी हमें आगे बढ़ना है
यही हमारा जीवन है।

हमें मूलभूत अधिकार प्राप्त करना है
हमें हक्क प्राप्त करना है
रुकना नहीं है
रुकावटों - बाधाओं को लाँघते हुए
निरंतर आगे बढ़ना है।

जीवन में निरंतर संघर्ष करते रहना
संघर्ष का दूसरा
नाम ही जीवन है। •

भारत माता को नित्य नमन

नरेश हमिलपुरकर,
चिरगुप्पा-585412,
बीदर (कर्नाटक),
मो : 08951311253

भारत माता को भक्ति से नित्य नमन करना
सर्वत्र हरा भरा बाग बागीचा चमन करना

शहीदों के मंदिर बने, सदा अमर ज्योति जले
सत्य अहिंसा परम धर्म का पुण्य वतन करना

शांति प्रगति के लिए एक मत, एक मन हो
हर नर नारी को अपना भाई बहन करना

कोई भूखा प्यासा, ना रोगी निरुद्योगी रहे
हर क्षेत्र में रोज नये रोजगार सृजन करना

लक्ष हो, संकल्प हो, प्रबल आत्म विश्वास हो
प्राण देकर भी पूरा हर वादा, हर वचन करना

अगर हकीकत में शहीदों का सम्मान है तो
उनकी हर आरजू पूरी, पूरा हर स्वप्न करना

बच्चा-बच्चा देश-धरोहर की सुरक्षा करना
मातृभूमि को जान से ज्यादा जतन करना

हे माँ भारती, सबको न्यारा प्यारा करना
सबको ज्ञानी बलिदानी, नेक सज्जन करना। •

दो अधूरी और एक पूरी इबारत को पढने-समझने का सफल प्रयास

अनन्तलक्ष्मी एन.बी.

श्रीमती चन्द्रकान्ता एक सिद्धहस्त लेखिता है। अब तक उनके '७' उपन्यास, '१३' कहानी संग्रह, '५' कथा संकलन 'यही कहीं आसपास' शीर्षक कविता संग्रह, '१' आत्मकथात्मक संस्मरण (हाशिए की इबारतें) और '१' संस्करण एवं आलेख्र संग्रह (मेरे भोज पत्र) प्रकाशित हो चुके हैं। चन्द्रकान्ताजी ने बदलते समय और सामाजिक अवस्था के हर विचलित करनेवाले पहलू को साहित्य का प्रतिपाद्य बनाया है।

'हाशिये की इबारतें' नामक आत्मकथात्मक संस्मरण सन् २००९ में प्रकाशित हुआ। 'हाशिए की इबारतें' में चन्द्रकान्ता ने उन स्त्रीयों के जीवन के बारे में लिख्रा है, जो उनकी जीवन-यात्रा में साथ रही है। वे हैं - माँ, बहन तथा सासू माँ। लेखिका ने 'मेरी माँ' शीर्षक के अन्तर्गत माँ के संबन्ध में '१६', 'मेरी छुटकी बहनः शीला' में '२२' एवं 'मेरी सासू माँ' शीर्षक में '२२' आलेख्र लिख्रे हैं।

'मेरी माँ' ख्रण्ड में बचपन में ही अपनी माँ को ख्रो चुकी लेखिका, माँ के जीवन के पन्नों को बेहद मार्मिक और सुन्दर ढ़ग से ख्रोलती जाती है। इन आलेख्रों में समाहित माँ के जन्म से लेकर बीमारी तक की ज्यादातार घटनायें लेखिका ने अपनी मोसी से सुनी थी और कुछ अपनी विरंग स्मृतियों से संजोया है। पिता के घर में 'गुणी' और पति के घर में 'संपत्ती' के नाम से जानेवाली माँ के जीवन को, उनके विवाह प्रसंग, बाद में उनकी बीमारी - जो तब लाइलाज थी - का ज़िक्र करते हुए चन्द्रकान्ता बचपन की घटनाओं और आसपास की प्राकृतिक परिवेश को बडी सजीवता से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। लेखिका अपने और माँ के बीच की आत्मीय संबन्ध को इस प्रकार प्रकट किया है कि - "माँ मुझे समझती थी, उतना तो ज़रूर समझती थी, जितना उसके बाद आज तक किसी ने न समझा।"[१] ".....उसका होना ही सिर पर तने शामियाने जैसा था। सुरक्षा और आश्वस्ति का बायस।"[२] इस ख्रण्ड में लेखिका, माँ के अकेलेपन और प्यार को समझनेवाले पिता की कविता को भी शामिल किया गया है।

दूसरे ख्रण्ड में 'मेरी छुटकी बहन! शीला' शीर्षक से अपनी बहन के जीवन की नियती एवं त्रासती का चित्रण किया है। युवावस्था में शीला की मौत जलने से होती है। शक के दायरे में उसका पति आता है। पर जैसे आम हिन्दुस्थानी लोगों की मानसिकता रहती है कि 'जानेवाले तो लौटकर नहीं आयेगा, कसूरवार को सजा मिल भी जाय तो क्या फायद?' चन्द्रकान्ता के पिता एवं बन्धुजनों के सोच भी कुछ अलग नहीं था। फलस्वरूप शीला के पति एवं ससुरालवाले कानूनी सजा से बच गये। लेकिन चन्द्रकान्ता इस कायराता सोच के ख्रिलाफ मन में उठी तीव्र आक्रोश छिपा नहीं पाती... "मेरे अपने मुझे अस्थिर और इम्मैचुअर करते हैं, क्योंकि मैं शीला की मौत को आज भी नियती के ख्राते में डाल ख्रुद को तसल्ली नहीं दे पाती। उसकी बात उठते ही रिएक्ट करने लगती हूँ। ....जिन्दगी के साथ ख्रिलवाड करने और होते देख्रनेवाले कहीं न कहीं तो अपराधी ज़रूर होते हैं।"[३]

तीसरे ख्रण्ड में 'मेरी सासू माँ' शीर्षक के अन्तर्गत लेखिका ने अपने सासू माँ धनवती विशिन उर्फ तुलसी दप्तरी के बारे में विस्तार से लिख्रा है। उन्हें भाभीजी नाम से जाना जाता था। भाभीजी का चरित्र कुछ ऐसा था कि वह हर हाल में अपनी सत्ता बनायी रख्रती थी। बहु-बेटों को उतनी ही छूट देती थी जितने में वे उसके बनाये घेरे में रह सकें। समय के साथ-साथ सासू माँ के स्वभाव में भी बदलाव आया। उनमें कठोरता के स्थान पर कोमलता दृष्टिमत होने लगी। चन्द्रकान्ता को वे कहानियाँ सुनाती थीं; जिनका उपयोग लेखिका ने अपने साहित्य में लिया। वे जहाँ है, बडी सजीवता से अपना प्रभाव क्षेत्र निर्मित करती है। पति के मृत्यु के बाद बुढ़ापे में भाभीजी अमेरिका में अपने छोटे बेटे-बहु के पास आगये। बाद में नबीयत बिगडने के कारण बेटे ने उन्हें एक रिकवरी सेन्टर

शिक्षा शास्त्री रवीन्द्रनाथ ठागोर

दीपा आर.एस.

गुरुदेव के शिक्षा-दर्शन में आदर्शवाद के यथार्थ - एवं अथ्यात्मवाद दोनों रूपों का समन्वय विद्यमान है। धर्म आध्यात्मिक विश्व का अनुभव, जीवन की क्रियाओं का उचित केन्द्र, विचार एवं सत्य की इकाई है। गुरुदेव प्रकृति का अनुकरण करो सिद्धांत के समर्थक है। क्योंकि गुरुदेव स्वीकार करते थे कि कली का स्व-विकसित सौन्दर्य ऐसा अनिंदय होता है कि किसीके कठोर हाथों से बलपूर्वक खोली गई पंखुड़ियों का विकास उसकी तुलना कदापित नहीं कर सकता। अतः अनिवार्य है कि हम छात्रों का अविकसित और अर्ध विकसित कलियों को प्रकृति के आत्मीयतापूर्ण समीर के सहारे खिलने को छोड़ दें। ऐसे फूल रंग-रूप और सुगंध दूसरों से अधिक मोहक और लम्बे समय तक टिकनेवाली होगी।

शिक्षक एवं विद्यार्थी के बारे में गुरुदेव की मान्यता यह है - शिक्षक आदर्शवादी, सदा जीवन और उच्च विचार के सिद्धांत के अनुयायी, अध्ययनशील तथा उदार हृदय आश्रमवासी सन्यासियों की भांति हों तो बालकों को पुत्र समझकर विदवा दान दें। उन्हें बालकों के स्नेह की दृष्टि से देखना चाहिए एवं अध्यापन के समय उनसे बिलकुल घुल-मिल जाना चाहिए। विद्यार्थी भी आदर्शवादी हो शिक्षकों को श्रद्धा एवं सम्मान की दृष्टि से देखें, स्वावलम्बी, स्वाध्यायी एवं पवित्रता के उपासक हों, विलासिता से दूर रहें।

गुरुदेव के दृष्टिकोण से धर्म एवं ईश्वर को सिखाया नहीं

दो अधूरी और एक पूरी इबारत को पढने-समझने का सफल प्रयास....

में शिफ्ट किया। अपने छोटे बेटे के पास साल भर रहने आई और वापस घर बटे-बेटे के पास लौट न पाई। भाभी जी के व्यक्तित्व में पाठक एक तीखी और स्पष्ट सशक्तता देख सकते हैं।

'हाशिए की इबारतें' शीर्षक किताब के पहले दो अध्याय दो अधूरी स्त्रीयों का दास्तान है, जिसे भरे-पूरे समाज में स्त्री को चुप रहकर सहना है। चन्द्रकान्ता की माँ की अधूरी सी कहानी स्त्री के गरिमामय एकांत और संघर्ष की कहानी है। माँ के मुकाबले शीला नये ज़माने की पढ़ी-लिखी स्त्री थी किन्तु इस पढे-लिखेपन न भी इसकी सहने की परिस्थिति में किसी फर्क की गुंजाइश नहीं निकाली। इन दो स्त्रीयों के मुकाबले लेखिका की सास जिन्हें वे भाभी जी कहती थी, स्त्री के साहस, भरे पूरेपन और जिजीविष की एक मिसाल है।

इन संस्मरणों में कही भी व्यर्थ की भावुकता दैन्यता या विवशता का नज़र नहीं आता। यात्रा संस्मरणों की शैली में स्थानीय परिवेश से लेकर विदेशी ज़मीन तक के परिवेश के बारे में चन्द्रकान्ता ने इतनी खूबसूरती से लिखा है कि इनको पढ़ते हुए उन स्थलों की यात्रा पाठक भी करने लगता है। जहाँ कहीं अवकाश मिलता है, लेखिका कश्मीरियत के मनोहरी जादू के पिटारे को खोल देती है। इन संस्मरणों कर्म सन्दर्भोजित कश्मीरी लोककथायें एवं गीतों को भी शामिल किया गया है। हर अध्याय को खूबसूरत, कथात्मक और अर्थपूर्ण शीर्षकों ने विशिष्ट बना दिया है। इन संस्मरणों में प्रयुक्त भाषा अत्यढीकरण की अद्‌भुत क्षमता से युक्त हैं।

इन संस्मरणों के संबन्ध में चन्द्रकान्ता कहती हैं कि - "आत्मकथात्मक संस्मरणों के बहाने मैंने दो अधूरी और एक पूरी इबारत को पढ़ने-समझने की कोशिश की है"। 'हाशिए की इबारतें' चन्द्रकान्ता जी के इस सफल प्रयास का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

सन्दर्भ सूची:

१. *चन्द्रकान्ता - होशिए की इबारतें, पृ.६२*
२. *चन्द्रकान्ता - होशिए की इबारतें, पृ.६८*
३. *चन्द्रकान्ता - होशिए की इबारतें, पृ.७८*
४. *चन्द्रकान्ता - होशिए की इबारतें, पृ.४*

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग,
कार्यवट्टम कैंपस, केरल विश्वविद्यालय

'भिखारिन' की सामाजिकता

उमा श्रीदेवी एस.

किसी भी साहित्य रुप में सामाजिक वास्तविकता विद्यमान रहती है। कथा-साहित्य में यह सामाजिक वास्तविकता कलात्मक स्थापन्य बनकर ही आती है। समाज में व्यक्ति के जीवन में सुख और दुःख परिवर्तित होते हैं। व्यक्ति की स्वार्थता उसे अन्धा बना देती है। अमीर लोग गरीबों का धन भी हडपकर अपनाते हैं, और उन्हें शोषण करते हैं। यही भिखारिन नामक कहानी द्वारा टैगोरजी हमें दिखाते हैं।

प्रस्तुत कहानी में गरीबों की दया, ममता आदि को टैगोरजी ने अच्छी तरह चित्रित किया है। साथ ही साथ अमीरों की दयाहीनता एवं क्रोध का भी खूब चित्रण हुआ है। गुरुदेव ही पहले साहित्यकार हैं जिन्होंने समाज के साधारण नर-नारियों, गरीबों एवं निम्न-स्तर के लोगों का साहित्य में सहानुभूति से चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानी में ही ऐसा ही एक पात्र हैं अन्धी-भिखारिन। प्रस्तुत संवाद से अमीरों की दयाहीनता का पता चलता है। अन्धी ने कहा सेठजी मेरी जमा-पूँजी में से दस-पाँच रुपये मिल जायें जो बड़ी कृपा हो। मेरा बच्चा मर रहा है, डाक्टर को दिखाऊँगी। "सेठजी ने कठोर स्वर में कहा- कैसी जमा पूँजी? कैसे रुपये? मेरे पास किसी का रुपया जमा नहीं।"[१] अमीर व्यक्ति द्वारा शोषण होने पर भी ममता नामक विकार गरीब लोगों पर जमता ही रहता है।

प्रस्तुत कहानी में टैगोरजी अमीर द्वारा गरीब का शोषण, उनकी दयाहीनता आदि का खूब चित्रण करते हैं। तत्कालीन वातावरण का यथार्थ चित्रण ही इसमें हुआ है। यही टैगोरजी को सबसे अलग अनुपम बनाते हैं। व्यक्ति को एक दूसरे के प्रति सहानुभूति, स्नेह, आदि नहीं। वह संघर्षशील रहता है। आज मनुष्य धन के पीछे भागता रहता है। उसमें दया का अंश तक नहीं रहता। स्वार्थता ही सब कहीं व्याप्त है।

शिक्षा शास्त्री रवीन्द्रनाथ ठागोर.....

जा सकता, अपितु धर्म का जीवन से जन्म होता है इसलिए वह जीकर ही सीखा जा सकता है। विश्वभारती में विदेशों से भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग आते हैं। वे अपने-अपने धर्म का पालन करने में पूर्ण स्वतंत्र होते हैं।

प्रचलित परीक्षा-प्रणाली को गुरुदेव अनावश्यक मानते हैं। परीक्षा का उद्देश्य बालकों की रचनात्मक शक्तियों का विकास करना होना चाहिए। गुरुदेव शिक्षा पर शासन का नियंत्रण नहीं चाहते थे, क्योंकि उससे शिक्षा की स्वतंत्रता नष्ट हो जाती है। तथा नवीन प्रगति के समुचित अवसर और साधन नहीं मिलते हैं। राजनीति में सक्रिय भाग लेने से विद्याध्यन में बाधा पड़ती है। वे स्वानुशासन को ही श्रेयस्कर समझते थे जिसका पालन शिक्षक एवं विद्यार्थी के साथ-साथ रहने से ही सम्भव है। शिक्षक प्रेम की प्रतिमूर्ति हों, जिससे बालक उनसे हिलमिल जाएं और अनुशासनहीनता के लिए उन्मुख ही नहीं।

गुरुदेव सामाजिक शिक्षा अर्थात् प्रौढ-शिक्षा, सह-शिक्षा एवं स्त्री-शिक्षा को अत्यन्तआवश्यक मानते थे। उनके लिए समाज और समाज में रह रही महिलाओं का स्थान तथा नारी जीवन की विशेषताएं गंभीर चिंतन के विषय थे और उन्होंने इस विषय में गहरी अंतर्दृष्टि डालकर शांतिनिकेतन में बलिकाओं के लिए विद्यालय की स्थापना भी की थी।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि गुरुदेव ने शिक्षा सिद्धांतों को नवीन प्रगतिशीलता के पथ पर लाने का काम किया, क्योंकि परीक्षा, अनुशासन, ग्राम-पुनर्निर्माण संबंधी उनके दृष्टिकोण प्रगतिशीलता के द्योतक है। उन्होंने आध्यात्मवाद को व्यावहारिक जीवन के संबंधित किया। शिक्षा-क्षेत्र में मानवतावाद, ने विश्व-बंधुत्व, स्वतंत्रता एवं आत्मक्रिया के सिद्धांतों को बल देकर समन्वयात्मक संस्कृति के निर्माण का प्रयास किया। किंतु शोक यह बात रही कि उनके सिद्धांतों को पूरी तरह सार्वलौकिकता नहीं मिल कसी, यदि मिली तो विश्व में सत्यं, शिवं, सुन्दरम के झण्डे के नीचे सम्पकूर्ण मानव-जाति एकत्र होकर श्रद्धावनत हो, गुरुदेव को शीश झुकाती।

शोध छात्रा,
सरकार विमेन्स कालेज, त्रिवेन्द्रम-१४

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर की रचनाओं में मानव-प्रेम का उत्कृष्ट रूप

आशादेवी एम.एस.

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर एक ऐसी महाप्रतिभा है जिन्होंने साहित्य की विभिन्न विधाओं और संगीत तथा चित्रकला में सतत् सृजनरत रहते हुए अंतिम सांस तक सरस्वती की साधना की ओर भारतवासियों के लिए गुरुदेव के रूप में प्रतिष्ठित हुए। टैगोर जी भारत के सांस्कृतिक राजदूत थे। उन्होंने शान्ति और प्रेम का सन्देश संसार को दिया। साथ ही दुनिया के सामने उन्होंने यह उदाहरण रख दिया कि पराधीन भारत में भी महान साहित्य रचा जा सकता है। इस प्रकार उन्होंने विश्व साहित्य में भारतीय साहित्य को उच्च स्थान दिलाया।

रवीन्द्रजी की रचनाएं कालातीत एवं सर्वजन स्वीकार्य है। उनकी कालजयी कृति 'गीतांजलि' पर सन् १९१३ का साहित्य के क्षेत्र में, विश्व का सर्वोच्च 'नोबेल पुरस्कार' प्राप्त हुआ था। एक भारतीय का, वह भी पराधीन देश के कवि का वह विश्व पुरस्कार प्राप्त करना उस समय एक अभूतपूर्व घटना थी। यह पुरस्कार प्राप्त करके रवीन्द्रजी ने केवल भारत को ही नहीं, सारे एशिया - महादेश को ही गौरवान्वित किया था। रवीन्द्र जी की रचनाओं में मानव माहात्म्य एवं मानव मैत्री की वाणी मुखरित हुई है। प्रकृति प्रेम, ईश्वर के प्रति निष्ठा और मानवतावदि मूल्यों के प्रति समर्पण भाव से उनकी रचनाएँ संपन्न हैं।

भारत में महामानव या महात्मा के रूप में जो भी सर्वजनवरेण्य हुए हैं, वे सब अपनी जीवनव्यापि तपस्या एवं कर्मसाधना द्वारा मानव-प्रेम एवं मानव-मैत्री की वाणी का प्रचार किया था। जिनके हृदय में दीन, दलित एवं पतित जनों के लिए असीम करुणा थी और जिन्होंने संपूर्ण सृष्टि के साथ अपने अन्दर का योग स्थापित किया था, वैसे ही महामानव थे रवीन्द्र जी। उन्होंने पृथ्वी के दुस्तम प्रान्त के मनुष्य को भी अपनी गहरी आत्मीयता के संबंध से निकटतम कर लिया और तुच्छातितुच्छ एवं नीचातिनीच को भी महत्व प्रदान किया।

कवि कहते हैं कि हम मंदिरों में भगवान की पूजा करते हैं, पर उसे नहीं पाते। मानव मन रूपी मंदिर में निवास करनेवाले भगवान का अपमान करके यह कहना कि हम भगवान की पूजा उसे प्रसन्न करने के लिए करते हैं, कहां तक उचित हैं? भगवान दीन-बन्धु एवं करुणा सागर है। जो सबसे नीच एवं अधम है, वहाँ उसके युगल चरण विराजित हो रहे हैं। इस सत्य को हृदयंगम कर लेने के बाद क्या हम किसी मनुष्य नीच या पतित समझकर उससे घृणा कर सकते हैं?

संक्षेप में कह सकते हैं कि युग-युग में देश-देश में

'भिखारिन' की सामाजिकता....

श्री. रवीन्द्रनाथ टैगोर भारत के महान साहित्यकारों में एक हैं। कविता, चित्रकला, संगीत आदि में भी उनकी रुचि है। लिखने का अतिसरल ढंग अपनाते हुए उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों जैसे किसानों और ज़मीन्दारों के बारे में लिखा। जातिवाद, भ्रष्टाचार, निर्धनता जैसी सामाजिक बुराइयों उनकी रचनाओं की अभिन्न अंग बनी रही नोबेल पुरस्कार प्राप्त सर्वोच्च साहित्यकार भी है। उनकी अनेक कृतियाँ भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनूदित होकर चर्चित हुई हैं। उनकी प्रतिभा के विषय में लिखना सूर्य को दीपक दिखाने के समान हैं।

उनकी कहानियां भारतीय सहित्य के इतिहास में मील का पत्थर है। उनकी कहानियों में सजीव कल्पना, अतिशयोक्ति, भावुकता आदि भरी पड़ी हैं। उनकी कहानियाँ सर्वश्रेष्ठ हैं और बार-बार पढ़ने के लिए बाध्य करानेवाली भी हैं।

संदर्भ ग्रंथ:

(१) टैगोर की संपूर्ण कहानियाँ (भाग १), पृ.८५

शोध छात्रा, श्री शंकराचार्य
यूनिवेर्सिटी ऑफ सांस्कृत, कालडी

गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुरः भारतीय शिक्षा में नवयुग के अग्रदूत

सुस्मिता एस.वी.

रवीन्द्रनाथ जी के शिक्षा पद्धति से उनके व्यक्तित्व की वास्तविक झलक दर्शित होती है। वे स्वतंत्रता प्रेमी होने के कारण उनके ज्ञान का पथ स्वाधीनता पर आधारित था। वे देश-भक्त थे। उनकी शिक्षा देशीय संस्कृति पर आधारित थी वे एक कवि थे और अपने छात्रों को काव्यमय वातावरण में रहने की सारी सुविधाएँ देती थी। वे मानवतावादी और विश्वप्रेमी थे। उनके शिष्यों को समस्त चराचरों से प्रेम करने तथा मानवता के पुनीत विचार से आगे बढ़ने की प्रेरणादेते थे।

जीवन को अनावश्यक बन्धनों से मुक्त करके उसे स्वाभाविक विकास का पथ दिखलाना ही शान्ति निकेतन का प्रमुख लक्ष्य था। वे अपने भयानक स्कूल जीवन के बदले छात्रों को पूर्ण स्वतंत्रता देते थे। पुराने गुरुकुल के समान पेडों के नीचे ही प्रायः कक्षा चलाते थे। लड़कों को घूमने का यथेष्ट अवसर दिया जाता था। शिक्षण में साधारण विषयों के अतिरिक्त खेल-कूद, संगीत, नाटक आदि को भी स्थान देते थे। स्कूली जीवन में उत्साह और सक्रियता के लिए प्रेरक साधन अनेक थे। शिक्षण को मनोरंजक तथा बालकों के वैयक्तिक, सामाजिक तथा देशीय भावनाओं को बढ़ाने में वे विशेष ध्यान रखते थे।

मॉडेसरी शिक्षा पद्धति की तरह सभी छात्रों को पूर्ण स्वतंत्रता दिया जाता था। यहाँ पुस्तक के बिना खेल-खूद तथा चित्रों के आधार पर पढ़ाते थे। इससे उनका मन अधिक उल्लसित होता था और विषय-ग्राहक भी बन जाता था। रवीन्द्र जी ने भी इसी बात पर विशेष ध्यान दिया था। छात्रों के साथ स्वयं रवीन्द्रजी भी भाग लेकर सबों को प्रोत्साहित करते थे। गुरुदेव ने खेल और अध्ययन के अन्तर को मिटा दिया जिससे बालकों को अध्ययन में भी खेल-सा आनन्द आने लगा। अन्य अध्यापक भी छात्रों के साथ मिलजुलकर खेलते थे और प्यार का व्यवहार करते थे। इस तरह गुरु-शिष्य का बन्धन दृढ होता था। विद्यार्थियों के मानसिक वातावरण को पवित्र बनाने में और ज्ञानोपार्जन को आनन्दमय बनाने में यह अत्यन्त सहायक होते थे।

समकालीन शिक्षा पद्धति में ठाकुरजी के शिक्षा पद्धति का गहरा प्रभाव जान पडा है। पहले तो बच्चों को पढ़ाई के रुप में बहुत-सा कष्ट सहना पड़ता था। उन्हें कोई बाहरी ज्ञान नहीं होता था। पाठपुस्तक में जो होता है, उसे सिर्फ हृदयस्थ किया जाता था। लेकिन आज इस स्थिति में थोड़ा-सा बदलाव आया है। भारत सरकार ने डी.पी.इ.पी. जैसे अनेक शिक्षा पद्धतियाँ स्कूलों में लागू करने का प्रयास किया था। इसके अनुसार विविध प्रकार की परियोजनाएँ तथा संगोष्ठियाँ चलीं। इसमें छात्रों को अपने अनुभव के आधार पर तथा अपने आसपास की स्थितियों के अनुसार उनके मन में आनेवाले सभी आशयों को व्यक्त करने का पूर्ण स्वतंत्र्य होता है। आनेवाले समाज को प्राचीन सभ्यता तथा संस्कृति के बारे में इस पद्धति द्वारा परिचित होता है। इसके अतिरिक्त छात्रों के व्यक्तिविकास केलिए अत्यधित अनुकूल वातावरण सिद्ध होते हैं।

ठाकुरजी कहते हैं कि हमें प्राचीनता की नींव पर नया भवन खड़ा करना है। आज के नवयुवकों से वे कहते हैं कि शिक्षा को व्यवसाय न बनाकर इसे पवित्र कर दें। शिक्षा केवल ज्ञानोपार्जन का एक साधन मात्र नहीं बल्कि ज्ञान-निर्माण का भी है। संक्षेप में कह सकते हैं कि रवीन्द्रनाथ ठाकुर भारतीय शिक्षा पद्धति के अग्रदूत या सेनानी थे। इनके शिक्षा संबंधी सभी तत्वों को समकालीन शिक्षा क्षेत्र में लागू करके इसके विकास केलिए प्रयत्न करना हरेक नागरिक का कर्तव्य है।

शोध छात्रा, एम.जि.कालेज, त्रिवेन्द्रम।

जितने महान साहित्यकार अवतरित हुए हैं, सबने मनुष्य के मनुष्यत्व की महिमा का जयगान किया है। रवीन्द्र साहित्य में भी मनुष्य की वन्दना-वाणी सर्वत्र मुखरित है। विश्वबन्धुत्व की भावना से परिपूर्ण है रवीन्द्र साहित्य। कालजयी साहित्य साधना और व्यक्ति-जीवन से रवीन्द्रनाथ जी मानव मन में आज भी ज़िन्दा रहते हैं।

शोध छात्रा, हिन्दी विभाग, कार्यवट्टम कॉंपस

श्री अक्षरगीता (सत्रहवां अध्याय)

डॉ.वीरेन्द्रशर्मा, डी-११३, इला अपार्टमेंट्स, बी-७, बसुंधरा एन्क्लेव, दिल्ली-९६

अर्जुन बोले-

शास्त्रज्ञानविधि तज करते जा
पूजन श्रद्धायुक्तस्वरूप
उनकी निष्ठा कृष्ण कौन सी
सात्विक राजस तामस रूप।

श्रीभगवान बोले-

सभी मनुष्यों में स्वभाव से
श्रद्धा होती त्रिविधस्वरूप
विवरण तुम यह उसका सुन लो
सात्विक राजस तामस रूप।

सब की ही श्रद्धा होती है
उनके अन्तस के अनुरूप
श्रद्धामय है पार्थ पुरुष यह
श्रद्धा के अनुसार स्वरूप।

देव पूजते हैं सात्विकजन
राजस यक्ष राक्षसों को
एवं तामस पूजा करते
प्रेत, भूतगण, अन्यों को।

शास्त्रज्ञानविधिरहित घोर तप
हैं मनुष्य जो भी करते
काम, राग, बल युक्त हुए वे
दम्भ तर्प से युत होते।

तन में स्थित सब भूतों को
कृश करते जन जो भी हैं
अन्तः स्थित मुझको भी, जानो
वे आसुरनिश्चय ही हैं।

सभी मनुष्यों का होता है
तीन तरह का प्रिय आहार
वैसे ही तप दान यज्ञ भी
सुन लो उनके भेद-प्रकार।

स्वास्थ्य, सत्व, बल वर्द्धक एवं
आयु प्रीति सुखवर्द्धक है
चिकना, स्थिर हृद्य रसीला
भोजन प्रिय सात्विक को है।

कड़वा खट्टा तीखा रूखा
करता दाह, उष्ण अति है
लवणयुक्त दुःख शोक रोगप्रद
भोजन प्रिय राजस को है।

है उच्छिष्ट अधपका बासी
दुर्गन्धित जो गतरस है
जो अशुद्ध होता है - ऐसा
भोजन प्रिय तामस को है।

मख करना कर्त्तव्यभाव से
शास्त्रविहित विधि से करते
अफलाकांक्षी पुरुष जिसे हैं
सात्विक मख उसको कहते।

फल की इच्छा को लेकर या
दम्भ भावना से जिसको
यज्ञ किया जाता है अर्जुन,
जानो मख राजस उसको।

विधि के बिना, बिना मंत्रों के
अन्न दान बिन श्रद्धा के
तामसयज्ञ कहा जाता वह
होता बिना दक्षिणा के।

देव अर्चना द्विज गुरु ज्ञानी
पूजन, शुचिता, ऋजुता-भाव
ब्रह्मचर्य, शारीरिकतप यह
हिंसा का सम्पूर्ण अभाव।

हो उद्वेग न जिससे, हितकर
प्रिय हो सत्यवचन जो हो
कहते वाणी-तप हैं उसको
पाठन पठन साधना हो।

आत्मविनिग्रह मौनसाधना
भावों की सम्यक् शुचिता
सौम्यभावना, मनका सुख-यह
मानसतप है कहलाता।

श्रद्धापरमयुक्त होकर-जन
तप तीनों जो करते हैं
बिना कामना करते फल की
सात्विक उसको कहते हैं।

हेतु मान पूजा आदर या
दम्भ भाव से होता है
जग में अस्थिर फलद, अनिश्चित
राजसतप वह होता है।

आत्मकष्ट पा मूढ़भाव से
किया गया दृढ़पूर्वक है
या अनिष्टकारी अन्यों का
कहलाता तामसतप है।

पात्र काल दिक् देय दान है
जो कर्त्तव्य भावना से
उपकारी को नहीं देय है
कहते सात्विकदान उसे।

प्रति उपकार हेतु जो होता
अथवा लक्ष्य बना फल को
क्लेश उठा फिर दान दिया जो
कहते हैं राजस उसको।

आदर बिना अवज्ञा करके
जो कुपात्र को देते हैं
काल देश उपयुक्त नहीं हो
उसको तामस कहते हैं।

ऊंकार तत् सत् - ये तीनों
नाम ब्रह्म के कहे गए
बार्ह्मण वेद यज्ञ सब उससे
आदि सृष्टि में रचे गए।

होती हैं प्रारम्भ क्रियाएं
यज्ञ दान तप सब कुछ ही
ब्रह्मज्ञानियों की विधिसंमत
सतत **ऊं इति** कहकर ही।

यज्ञ दान तप आदि क्रियाएं
नहीं कामना फल की कर
इसी भाव से करते **तत् इति**
मोक्षकांक्षी हैं जो नर।

सत् बोधन में, साधु भाव में
है प्रयुक्त **सत् इति** होता
श्लाघ्य कार्य में तथा शब्द यह
है अर्जुन अंकित होता।

यज्ञ दान तप में स्थिति जो
कहलाती है **सत् इति** ही
होता कर्म तदर्थ तथा जो
कहते **सत् इति** उसको ही।

श्रद्धा बिना दान तप अर्जुन,
हवन **असत्** है कहलाता
नहीं लोक परलोक कहीं भी
है वह फलदायक होता।

अठारहवां अध्याय

अर्जुन बोले-

त्याग तथा सन्यासत्व यह
पृथक पृथक होता कैसा
केशिनिषूदन, महाबली, है
माधव, मेरी जिज्ञासा।

श्रीभगवान बोले-

है **सन्यास** काम्यकर्मों का
त्याग, मानते ज्ञानी हैं
त्याग सभी कर्मों के फल का
कहते अन्य मनीषी हैं।

दोष भांति ही कर्म त्याज्य है
कहते हैं कतिपय विद्वान
नहीं त्याज्य है कर्म, दूसरे
यज्ञ, दान, तप कर्म समान।

निश्चय सुन लो मेरा भारत
इनमें जैसा त्याग-स्वरूप
कहा गया है ऐसा अर्जुन
होते तीन त्याग के रूप।

यज्ञ दान तप कर्म नहीं हैं
त्याज्य, कर्म आवश्यक हैं
यज्ञ दान एवं तप करते
मनीषियों को पावन हैं।

(शेष भाग अगले पृष्ठ में)

देवता (लघुकथा)

डॉ.वी.गोविन्द शेनाय

विधुर वकील कल्याणराम को अपने तीन बच्चों की देखभाल केलिए एक स्वस्थ और भारमुक्त महिला की सख्त ज़रूरत महसूस हुई। वे विवाह केलिए भी तैयार थे। दलाल और मुअक्किलों के सम्मिलित श्रम से एक निस्संतान विधवा का पता लगा। उन्नीस साल की देवकूबाई। सात साल के वैवाहिक जीवन के पश्चात भी गोद नहीं भरी थी और तभी वैधव्य आ धमका था। बडे भाई के आश्रय में रहती थी। वकील साहब ने बात चलाई विवाह की जो एकदम स्वीकृत हुई। कल्याणराम विभोर हो उठे। विवाह सम्पन्न हुआ।

देवकूबाई ने गृहस्थी संभाली। वृद्धासास, बच्चे और पति सदातुष्ट; देवकुबाई के बडे भाई भी। वकील साहब के पेशों में भी गति आगई। देवकू भाग्यदेवता ही लगी यद्यपि थी वंध्या। और वकील साहब और संतान चाहते स्त्री कहाँ थे? परन्तु देवता जब कुछ करने को ठान लेते हैं तो कोई कर ही क्या सकता है? साल पूरा होने पर देवकू ने जुडुआँ बच्चों को जन्म दिया। कल्याणराम ने सिर पीट लिया। देवकू से कहा अब तुम्हीं इन पाँचों को संभालों। मैं और कोई कदम उठा नहीं सकता। बरदाशत की भी हद होती है।

श्री अक्षरगीता....

फल एवं आसक्ति त्यागकर
हैं कर्तव्य सभी ये कर्म
पार्थ, यही है मेरा निश्चय
एवं उत्तम मत का मर्म।

समीचीन कर्त्तव्य नहीं है
नियत कर्म का करना त्याग
त्याग मोह से करना उसका
कहलाता है तामसत्याग।

दुःख है कर्म मान तन पीड़ा
भय से जो तज देता है
करके राजसत्याग पुरुष वह
नहीं त्यागफल पाता है।

फल एवं आसक्ति त्यागकर
जो कर्तव्य भावना से
होता नियम कर्म है अर्जुन
कहते सात्विकत्याग उसे।

कुशल कर्कम में राग नहीं है
द्वेष नहीं अकुशल से है
संशयरहित सत्वगुणनिष्ठित
वह मेधावी त्यागी है।

नहीं देहधारी को संभव
तज देना सब कर्मों को
कर्मों के फल का जो त्यागी
कहते हैं त्यागी उसको।

इष्ट अनिष्ट तथा मिश्रित जो
त्रिविध कर्मफल होते हैं
अत्यागी पाते मरणानन्तर
त्यागी कहीं न पाते हैं।

सब कर्मों की सिद्धि हेतु जो
कर्म-अन्त होता जिनसे
सांख्यविहित पांचों कारण ये
महाबली जानो मुझसे।

अधिष्ठान है एवं **कर्ता**
करण पृथकविध है जिनमें
पृथक चेष्टाएं नानाविध
दैव पांचवां है इनमें।

करता कर्म मनुज जो भी है
वाणी मन औ' तन से ही
विधिसंमत हो या विरुद्ध हो
हेतु पांच उसके ये ही।

किन्तु वहाँ केवल आत्मा को
कर्ता माना करता है
दुर्मति अज्ञानी यथार्थ वह
सम्यक् नहीं समझता है।

मैं कर्ता हूं - भाव न जिसका
है निर्लिप्त बुद्धि जिसकी
बंधता नहीं न वध करता वह
हत्या भी कर लोकों की।

ज्ञाता ज्ञेय ज्ञान ऐसा है
कर्मप्रेरणा त्रिविध स्वरूप
करण कर्म कर्ता तीनों हैं
कर्मों के संग्रह के रूप।

कर्ता कर्म ज्ञान के होते
तीन भेद गुण के अनुसार
गुणसंख्यानशास्त्र में जैसे
वैसे उनके सुनो प्रकार।

सभी विभक्त प्राणियों में जो
एक अखंड दिखाता है
अव्ययभाव कराता है जो
सात्विकज्ञान कहाता है।

सभी प्राणियों में जिससे तुम
नाना भावों को जानो
पृथक विधाएं भी उन सबकी
राजसज्ञान उसे मानो।

एक कार्य में पूर्ण कार्यवत्
जो आसक्त बना रहता
युक्तिहीन तत्वार्थरहित वह
अल्पज्ञान तामस होता।

फल की इच्छा बिना नियत जो
कर्म कर दिया जाता है
राग द्वेष आसक्ति रहित वह
सात्विककर्म कहाता है।

भोगों के इच्छुक जन द्वारा
कर्म किया जो जाता है
अहंकार अथवा अति श्रम से
राजसकर्म कहाता है।

पौरुष हिंसा क्षय परिणति के
बिना विचार किया जाता
मोहपूर्वक कर्म उसे ही
तामसकर्म कहा जाता।

अनासक्त, धृति, साहस जिसमें
नहीं अहंवादी होता
सिद्ध असिद्ध कार्य में कर्ता
निर्विकार, सात्विक होता।

कर्मों के फल का अभिलाषी
जो अशुद्ध हिंसात्मक है
रागी लोभी हर्ष शोकयुत
कर्ता होता राजस है।

मूढ़ दुःखी आलसी अशिक्षित
दीर्घसूत्रता हठ करता
उपकारी-अपकारी झठ वह
कर्ता तामस कहलाता।

बुद्धि तथा धृति के तीनों ही
भेदों का गुम के अनुरूप
सुनो धनंजय विवरण मुझसे
पृथक पृथक सम्पूर्ण स्वरूप।

(शेष भाग अगले पृष्ठ में)

मध्ययुगीन हिन्दी संत साहित्य और रवीन्द्रनाथ

पार्वती आर.

व्यापक अर्थ में संस्कृति शब्द के जितने पक्ष होते हैं गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर उसकी साक्षात् प्रतिमूर्ति थे। साहित्य की कोई ऐसी विधा नहीं जिसको उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा समृद्ध नहीं किया हो। भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्य और संस्कृति में उनका गम्भीर परिचय था। रवीन्द्रनाथ टैगोर के अध्ययन, चिन्तन और मनन का क्षेत्र बड़ा व्यापक था। उन्होंने एक ओर भारतीय संस्कृति-तथा दूसरी और पाश्चात्य संस्कृति दोनों के अन्तस्थल में बैठकर उन्हें समझने का प्रयास किया। रवीन्द्रनाथ जी की अंग्रेज़ी 'गीतांजली' का प्रकाशन १९१२ ई में हुआ। पाश्चात्य जगत् में इसी के कारण रवीन्द्रनाथ को बहुत अधिक ख्याति मिली।

टैगोर-दृष्टि में संतों का ऐतिहासिक मूल्य, हिन्दु-मुसलमान में ऐक्य-प्रतिष्ठा या समन्वय-साधन की दृष्टि से है। इस समन्वय-साधन में रीति ही श्रेष्ठ है। उनका मार्ग ही अनुकरणीय है। संतों की समन्वय-साधन में बाह्य उपकरणों को आवश्यकता नहीं क्योंकि उनका मार्ग प्रेम-मार्ग है। अतः ऐक्य-साधना की दृश्टि से राजनीतिक समाधान की अपेक्षा संतों द्वारा प्रदर्शित प्रेममार्ग ही श्रेष्ठ है, भारत वर्ष की सत्य-साधना का निजी मार्ग भी यही है। भारत के इतिहास को जानने के लिए संतों को जनना आवश्यक है। अन्यथा वह इतिहास बोध अधूरा होगा। यही कारण है कि विदेशियों द्वारा लिखित भारतीय इतिहास पर रवीन्द्रनाथ ने आक्षेप कियाहै। इन ग्रन्थों में भारतवर्ष की वास्तविक छवि अंकित नहीं की गई है; क्योंकि भारतवर्ष केवल संघर्षों का ही देश नहीं है, समन्वय का भी देश है।

रवीन्द्र-दृष्टि में सन्तों की कविता चिर आधुनिक है, सर्वकालीन है क्योंकि उसमें सत्य का साक्षात्कार किया गया है। कवि जब सत्य की उपलब्धी कर लेता है। तो वह समझ जाता है कि सत्य का प्रकाश सहज एवं सुंन्दर है। रवीन्द्रनाथ जी का विश्वास था कि संत काव्य ही हिन्दी-साहित्य का श्रेष्ठ साहित्य है। रवीन्द्रनाथ जी ने मध्ययुगीन संतकवि कबीर, नानाक, दादु, रैदास, सुन्दरदास आदि की चर्चा कई स्थानों पर की है।

शोध छात्रा, एम.जि.कालेज, त्रिवेन्द्रम।

श्री अक्षरगीता....

प्रवृत्ति तथा निवृत्ति भयाभय
कार्य अकार्य जानती है
बंधन मोक्ष यथार्थ पार्थ वह
बुद्धि सात्विकी होती है।

कार्य अकार्य तथ्य का जिससे
धर्म अधर्म भाव का ही
सम्यक् ज्ञान नहीं होता है
पार्थ राजसीबुद्धि वही।

तामस गुण से आवृत अर्जुन
है अधर्म ही जिसको धर्म
वैसे ही विपरीत सभी कुछ
बुद्धि तामसी का यह मर्म।

मानस प्राण तथा इन्द्री के
पार्थ कर्म हैं जितने ही
धृति विशुद्ध समता से धारे
धृति होती सात्विकी वही।

अति अनुरागी फल अभिलाषी
धर्म अर्थ कामों को ही
धारण पार्थ करे जिससे जन
होती धृति राजसी वही।

दुष्टबुद्धिजन नहीं छोड़ता
निद्रा भय मद चिन्ता ही
दुःख को तथा धनंजय जिससे
धृति होती तामसी वही।

भारतश्रेष्ठ अब मुझसे सुन लो
त्रिविध हुआ करता सुख है
जहां रमण करता है साधक
होता अंत दुःख का है।

विष समान आरम्भ काल में
अमृत जैसा है परिणाम
आत्मबुद्धि आनंदजन्य जो
होता सात्विकसुख अभिराम।

विषय-इन्द्रियों के मिलने से
पहले अमृत सा लगता
परिणति में विष जैसा है जो
वह राजससुख है होता।

पहले तथा अंत में सुख्र जो
करता आत्मविमोहित है
निद्रा आलस तन्द्रा से वह
समुद्भूत तामससुख है।

धरा स्वर्ग अथवा देवों में
कोई भी हो सत्व कहीं
प्रकृतिजन्य इन तीन गुणों से
है कदापि भी मुक्त नहीं।

ब्रह्माण क्षत्री वैश्य शूद्र के
कर्य परंतप जितने हैं
वे स्वभावउद्भूत गुणों से
सम्यक् हुए विभाजित हैं।

हैं स्वभावउद्भूत कर्म ये
ब्राह्मण के शम, दम, ऋजुता
क्षमा, ज्ञान, विज्ञान, तपस्या
आस्तिकता एवं शुचिता।

नहीं पलायन युद्धभूमि से
शौर्य, तेज एवं पटुता
धृति, स्वभावउद्भूत कर्म यह
क्षात्र, दान, शासन-क्षमता।

कृषि, वाणिज्य तथा गोपालन
वैश्यकर्म स्वाभाविक है
सेवा करना कर्म शूद्र का
यह स्वभाव से होता है।

अपने अपने कर्म निरत हो
सिद्धि प्राप्त करते हैं नर
सुनो सिद्धि वे पाते कैसे
हुए कर्म निज में तत्पर।

ससुत्पन्न सब प्राणी जिससे
व्याप्त सृष्टि यह जिससे है
निज कर्मो से उसे पूजकर
परमसिद्धि पाता पर है।

(शेष भाग अगले पृष्ठ में)

रजनीचर सावधान!

डॉ. रामसनेहीलाल शर्मा यायावर,
फीरोज़ाबाद, उ.प्र.

जाग रही हैं
गुडाकेशध्वनियां
रजनीचर! सावधान
तमकी गहन कालिमा
पैशाचिक हुंकारें
पिटती हुई शिष्टता पूछे
किसे पुकारें
जन्म ले रहीं
अवतारी छबियां
हे निसिचर! सावधान

तुम लोक-हृदय-भंजक
यदि बने न लोक पाल
तो जन-मन की हुंकार
बनेगी महाकाल
पहचानों, युग की
ये गतियां
हे तमचर! सावधान

गज़ल

महेन्द्र जैन, 'जैन सदन', कोठी नं.८७१,
सेक्टर-१३, हिसार-१२५००१, हरियाणा

तेरी दुनिया में सभी ख़ुद को ख़ुदा कहते हैं
फिर बता तेरे वो इन्सान कहां रहते हैं

डूबा रहता हूँ मैं दिन-रात ख़्यालों में तेरे
मेरे अश्आर तभी तेरा बयां करते हैं

रात गुंचों पे ख़ुदा जाने कि क्या-क्या गुज़री
आज वो फूल भी बनने से बहुत डरते हैं

फूल अब भेंट में लेने से भी डर लगता है
लोग गुलदस्तों में बारूद छिपा रखते हैं

उनसे होकर के जुदा हम तो हैं बरबाद हुए
इक वो हैं रोज़ नई दुनिया बसर करते हैं •

श्री अक्षरगीता....

सम्यक् कृत परधर्मभाव से
उत्तम है गुणहीन स्वधर्म
प्राप्त न होता मनुज पाप को
करता जब स्वाभाविक कर्म।

त्याज्य न कर्म सहज है अर्जुन
दोष युक्त होने पर भी
अनिल धूम से आवृत जैसे
दोषयुक्त हैं कर्म सभी

रागरहित सर्वत्र बुद्धि जन
ईर्ष्यारहित जितात्मा है
त्यागभाव से सिद्धि परम वह
नैष्कर्म्य पा लेता है।

पाकर सिद्धि प्राप्त होता है
ब्रह्मरूप उसको जैसे
परम ज्ञान की निष्ठा, उसका
पार्थ, सार सुन लो मुझसे।

बुद्धि सात्विकी युक्त धैर्य से
करके आत्मा का नियमन
शब्द आदि विषयों को तजकर
वश में कर वाणी तन मन

निर्जन सेवी, अल्पाहारी
तजकर राग द्वेष के भाव
ध्यानयोग में नित्यपरायण
काम क्रोध बल दर्प अभाव

अहंकार, संग्रह को तजकर
निर्मम, शान्तियुक्त हो जन
विरतिभाव का लेकर आश्रय
बनता ब्रह्मप्राप्ति-भजन।

ब्रह्मभूत, हर्षित आत्मा है
नहीं शोक, इच्छा करता
सभी प्राणियों में समदर्शी
मेरी परम भक्ति पाता।

जितना, जो है तत्व भक्ति से
जान मुझे वह लेता है
तत्वरूप से जान मुझे फिर
मुझमें ही आ मिलता है।

करता हुआ कर्म सब ही वह
मेरे ही आश्रित रहता
मेरी ही अनुकम्पा से फिर
शाश्वत अव्यय पद जाता।

सभी कर्म अर्पित कर मुझमें
मन से हो मुझमें तत्पर
सतत चित्त अर्पित कर मुझमें
बुद्धियोग आश्रय लेकर।

मेरी शरण, कृपा से मेरी
पार करोगे विघ्न सभी
अहंकारवश नहीं सुना यदि
हो जाओगे नष्ट तभी।

अहंकारवश होकर यदि तुम
नहीं लडूँगा - मानोगे
यह व्यवसाय तुम्हारा मिथ्या
प्रकृति विवश हो जाओगे।

नहीं चाहते करना जीसको
पार्थ मोह के वश होकर
निज स्वभाव से बद्ध हुए तुम
कर लोगे परवश होकर।

भ्रमण कराता है माया से
यंत्रारूढ़भूत सब ही
सबभूतों के हृदयों में हैं
अर्जुन, स्थित ईश्वर ही।

सर्वभाव से भरतश्रेष्ठ तुम
ले लो उसके आश्रय को
उसकी करुणा से पाओगे
शान्ति परम शाश्वत पद को।

परम योग्य यह ज्ञान बताया
मैंने है तुमको ऐसा
पूर्ण विचार समीक्षा करके
करो कार्य चाहो जैसा।

सुन लो पुनः गोप्य से भी जो
सबसे अधिक योग्यवाणी
हो अत्यन्तच इष्ट तुम मेरे
अतः अहूँगा कल्याणी।

मुझमें तत्पर भक्त बनो तुम
मेरा पूजन करो नमन
मेरे प्रिय पाओगे मुझको
कहता तुमसे सत्य वचन।

आश्रय छोड़ सभी धर्मों का
मात्र शरण मेरी आओ
पापमुक्त कर ढूंगा तुमको
नहीं तनिक भी दुःख पाओ।

सहनशीलता भक्ति न जिसमें
नहीं श्रवण अभिलाषी भी
द्वेषदृष्टि मुझमें उसको यह
नहीं कहें उपदेश कभी।

मेरी परम भक्ति कर जो यह
मेरे भक्तों को देगा
परम योग्य संदेह न इसमें

भारतीय नवोत्थान तथा कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर

श्रीक्कुट्टी आर.

राष्ट्रीय शिक्षा के क्षेत्र में रवीन्द्रनाथ टैगोर मार्गदर्शक थे। चालीस वर्ष तक के तुच्छ ग्रामीण परिवेश में साधारण अध्यापक की भाँति सहर्ष कार्य करते रहे, तब भी जब वे ऐसे यज्ञ के भागी बन चुके थे जिसपर राजाओं की भी ईर्ष्या हो सकती थी। उन्होंने सबसे पहले शिक्षक के वे सिद्धांत निर्धारित और नियोजित किए जो आज शिक्षा शास्त्र में सर्वमान्य हो चुके हैं, चाहे व्यवहार में वे अभी तक न आ पाए हो। टैगोर द्वारा संचालित दो संस्थाएँ हैं-श्रीनिकेतन और शाँतिनिकेतन। गाँव की समस्याओं के समुचित समाधान केलिए उन्होंने सन् १९०१ में सिंह-भूमि जिले में श्रीनिकेतन आश्रम की स्थापना की। ग्रामविकास का कार्य करने केलिए एक विशेष प्रकार के प्रशिक्षित नवयुवकों की आवश्यकता होगी और इसी उद्देश्य से उन्होंने सन् १९१२ में श्रीनिकेतन में ग्राम-संगठन विभाग की स्थापना की। शांतिनिकेतन के माध्यम से वे प्रचलित शिक्षा प्रणाली में क्रांति उपस्थित करना चाहते थे। शांतिनिकेतन को कला का केन्द्र बनाकर भारतीय संस्कृति के विजयघोष से उन्होंने समस्त विश्व को घोषित कर दिया है।

टैगोर का कहना है कि अपने गाँवों को आत्म-निर्भर और समर्थ, स्वस्थ और प्रसन्न बनाओ, उन्हें अपने देश की सांस्कृतिक परंपराओं के प्रति सचेत करो और उन्हें यह क्षमता प्रदान करो कि वे अपनी भौतिक, बौद्धिक और आर्थिक परिस्थितियों को सुधारने के लिए विज्ञान के आधुनिक साधनों को सुचारु रुप से उपयोग कर सकें। गाँव ही हमारी राष्ट्रीय जीवनी शक्ति के आधारभूत कोष है। यदि उनका ह्वास हुआ तो शनैः शनैः सारे राष्ट्र का ह्वास हो जाएगा। अतः नगर और गाँव के बीच की संबंध अवश्य अटूट रखनी चाहिए।

संक्षेप में कह सकते हैं कि टैगोर की तूलिका ने जिस जादू की सृष्टि की है, सार्वजनीय संवेदनाओं से अद्भुत मनोमुग्धकारी संशिलष्ट चित्रों में जिन रुपरंगों की अमिट रेखाएँ उभारी हैं, शताब्दियों तक वे उनके काव्यत्व की सौंदर्य सृष्टा और वाणी के इस अमर गायक ने साहित्य में एक ऐसी विशिष्ट देन दी है जो अतीत की श्रद्धा, वर्तमान का विश्वास और भविष्य के गौरव का मूर्तिमान प्रतीक है। निराशा और अवसाद की घनघोर अवस्था में भी इस कवि-मनीषा की ज्ञान रश्मियाँ अनंतकाल तक साहित्य पथ को आलोकित करती रहेंगी। टैगोर की यही विशेषता है कि उन्होंने युग की प्रवृत्तियों को पहचाना और अनवरत आत्मशोध एवं अथकनिष्ठा द्वारा साहित्य में कहीं काव्यात्मक पुट दिया तो कहीं दार्शनिक गहराई में उतरकर बड़े ही स्पंदनशील शिल्प विधान की प्राण प्रतिष्ठा की। शांतिनिकेतन का राग-रंगमय, सरस दार्शनिक जीवन इसीलिए आज भी समस्त संसार का आकर्षण केंद्र है।

शोध छात्रा, यूनिवर्सिटी कालेज, तिरुवनन्तपुरम

श्री अक्षरगीता....

वह मुझको ही पा लेगा।
मेरा प्रिय कर्ता कोई भी
उससे बड़ा न मनुजों में
प्रियतर तथा न होगा आगे
कोई भी भूमंडल में।
धर्म्यवार्ता हम दोनों की
जो इसको पढ़ लोगा
ज्ञानयज्ञ से, मेरा मत यह
वह मुझको पूजेगा।
जो अदोष दर्शी श्रद्धा से
सुन भी उसको लेता
हो विमुक्त वह पुण्यवान के
शुभ लोकों को पाता।
क्या एकाग्र चित्त से अर्जुन
सुना वृत्त यह सारा
पार्थ मोह अज्ञान जनित क्या
हुआ विनष्ट तुम्हारा।

अर्जुन बोले-

कृष्णा आपकी अनुकम्पा से
मोहमुक्त स्मृति पाकर
मानूंगा उपदेश आपका
सशंयरहित, स्वस्थ होकर।

संजय बोले-

माधव-पार्थ महात्मा की यह
मैंने वार्ता सुन ली है
इस प्रकार अत्यन्त विलक्षण
जो अति रोमांचक भी हैं।
परम गोप्य यह योग सुन लिया
मैंने व्यास - कृपा से है
जो प्रत्यक्ष कृष्ण योगेश्वर-
श्रीमुख से ही निःसृत है।
केशव अर्जुन का यह पावन
राजन, है अद्भुत संवाद
बार बार होता हूं हर्षित
पुनः पुनः कर इसकी याद।
हरि के उस अद्भुत स्वरूप की
बार बार स्मृति मुझको
अति हर्षित, विस्मित करती है
पुनः पुनः राजन मुझको।
जहाँ कृष्ण योगेश्वर एवं
पार्थ धनुर्धर का घेरा
वहीं विजय श्री अचल नीति है
है विभूति यह मत मेरा। ●

रवीन्द्रनाथ ठाकुर का शैक्षणिक दर्शन

जयश्री बी.

रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने शिक्षा को मामव के सर्वांगीण विकास का साधन माना। शिक्षा के माध्यम से मानव का शारीरिक, भौतिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक विकास होता है। मनुष्य को पूर्ण मानव बनाना ही उसका उद्देश्य है।

ठाकुर भारतीय परंपराओं व आदर्शों के प्रबल समर्थक थे जिनका मानना था कि संपूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य तभी हो सकता है, जब हमारी समस्त शक्तियाँ पूर्ण रूप से विकसित होकर उच्चतम बिन्दु पर पहुँच जायें। इसीको उन्होंने पूर्ण मनुष्यत्व कहा है। उन्होंने ब्रह्मचर्य को मानव के व्यक्तित्व के विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक मानते हैं और कहते हैं कि इसके द्वारा मनुष्य अपने जीवन के महान् लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

शिक्षा में प्रकृति से घनिष्ठ संबन्ध होना ज़रूरी है। शांतिमय वातावरण में छात्रों को पूर्ण स्वतंत्रता से शिक्षा प्राप्त करने का अवसर दें ताकि उनमें ज्ञान-शक्ति विकसित हो जायें। जो विधा मातृभाषा के माध्यम से प्रदान किया जाता है वह अधिक प्रभावी होता है। भाषा के साथ भाव का प्रवेश होना शिक्षा के लिए अत्यन्त ज़रूरी है। इसीलिए उनकी मान्यता थी कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होने से व्यक्ति का मानसिक विकास शीघ्रतिशीघ्र होता है। उनके अनुसार शिक्षा केवल मातृभाषा में ही उपयोगी हो सकती है।

शिक्षक के संबन्ध में उनका विचार था कि हमारे शिक्षक जब यह समझने लगेंगे कि हम गुरू के आसन पर बैठे हैं और हमको अपने जीवन द्वारा अपनके शिष्यों में जीवात्मा फूंकनी है। अपने ज्ञान द्वारा उनके हृदय में ज्ञान और विद्या की ज्योति जगानी है। अपने प्रेम द्वारा बालकों को उद्धार करना है। उनके अमूल्य जीवन का सुधार करना है, उस समय वे सत्य रूप से स्वाभिमान के अधिकारी बन सकेंगे।

वे वैयक्तिक और सामाजिक दृष्टिकोणों से स्त्री-शिक्षा के समर्थक थे। समाज में स्त्रियों की दुर्दशा से वे चिन्तित थे। वे चाहते थे कि उन्हें भी उचित स्थान प्राप्त हो। वे स्त्री-पुरुषों में कोई भेद-भाव नहीं मानते थे बल्कि स्त्रियों को भी पुरुषों के साथ समान शिक्षा प्रदान करना चाहते थे। स्त्रियों केलिए उचित शिक्षा की व्यवस्था अत्यन्त आवश्यक हों ताकि पुरुष के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर समाज के उत्थान में योगदान दे सकें।

विद्यालय राष्ट्र के विकास को सुरक्षित रखने में समर्थ होना चाहिए। इसलिए विद्यालय का वातावरण प्राकृतिक एवं शांतिमय होना आवश्यक है। इसलिए अब हमें जंगलों तथा वनों की आवश्यकता है। गुरुकुल भी अवश्य होने चाहिए। वन हमारे रहने केलिए जीवित स्थान है। आज भी हमें उन वनों और उन गुरूकुलों में अपने बच्चों को ब्रह्मचर्य का व्रत रखाकर उनकी शिक्षा को संपूर्ण करना होगा।

शांतिनिकेतन और विश्वभारती के माध्यम से रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपनी आशाओं, आकांक्षाओं तथा सपनों को मूर्तीरूप या व्यावहारिक रूप प्रदान किया।

आशा, लक्ष्य, संकल्प का अभाव हो तो मानव-जीवन कागज़ की नाव की तरह अर्थहीन हो जाता है। वर्तमान शिक्षा-प्रणाली से हमारा मन अधूरा तथा अयोग्य रह जाता है। बुद्धि का पूर्ण रूप से विकास नहीं होता। मानसिक शक्तियों को नष्ट कर देनेवाली आनन्दरहित रूखी, फीकी तथा निर्जीव शिक्षा के कारण जीवन व्यर्थ रह जाता है। ऐसी हालत में शैक्षणिक दार्शनिक गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने शिक्षा के जिसे व्यापक दृष्टिकोण को हमारे सम्मुख रखा वह देश के सामने शिक्षा के सर्वोच्च आदर्शों को स्थापित करने व पूर्ण मनुष्यत्व की भावना बनाये रखने केलिए सर्वथा उपयोगी है।

शोध छात्रा, श्रीशंकराचार्य संस्कृत कालेज, कालडी

आप अपना भविष्य उज्ज्वल बनाना चाहते हैं?
तो
अनंतपुरियुम आनुम
नामक मलयालत आत्मकथा पढ़िये
या उसका अनुवाद पढ़िए

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर

श्रीदेवी एस.

भारत के गुरुदेव, जगत विख्यात दार्शनिक महान शिक्षा शास्त्री, शांति निकेतन के संस्थापक, संवेदनशील समाज सुधारक, साहित्य के नोबल पुरस्कार विजेता, विश्वकवि, मौलिक संगीतकार, अनोखे चित्रकार सर्वतोन्मुखी प्रतिभा के साहित्यकार और संपादक रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म ७ मई १८६१ को कलकत्ता में ब्रह्म समाज के प्रमुख नेता महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर के कुलीन ब्राह्मण कुल में हुआ। आपकी माता का नाम शारदादेवी था। जिस परिवार में रवीन्द्रनाथ का जन्म हुआ वह प्रतिभाओं का पुंज था।

बालक रवीन्द्रनाथ की काव्य प्रतिभा का प्रथम अंकुर तब फूटा, जब उसने ग्यारह वर्ष की अवस्था में ही काव्य रचना की। पन्द्रह वर्ष की आयु में उसकी पहली कविता प्रकाशित हुई। रवीन्द्रनाथ ने शिक्षा के लिये ही नहीं पर्यटन के लिये भी विदेश यात्राएँ कीं। यहाँ उन्हें श्रेष्ठ साहित्यकारों की रचनाएँ पढने का अवसर मिला। इससे उनकी साहित्यक प्रतिभा में निखार आया।

टैगोर रचित कविताओं, उपन्यासों, लघु-कथाओं तथा नाटकों का जो रूप पाठक के सम्मुख प्रस्तुत होता है वही उनके वास्तविक व्यक्तित्व की पहचान है। उनको साहित्य रचना की प्रेरणा अपने सुसंस्कृत परिवार के लोगों से मिली। टैगोर परिवार के लोग दो पत्रिकायें प्रकाशित करते थे - 'तत्वबोधिनी पत्रिका' और 'साधना'। टैगोर ने इन पत्रिकाओं के लिए कई कवितायें लिखीं। १८८२ में 'संध्या संगीत' प्रकाशित हुआ। इसमें प्रकृति का स्थान गौण और उनकी अपनी पीड़ा का महत्व अधिक दिखाई पड़ता है। अगले वर्ष में 'प्रभात गीत' प्रकाशित हुआ। सन् १८८६ में उनकी प्रथम महान काव्य रचना का प्रकाशन हुआ। यह थी 'कोरी-ओं-कमले' जिसमें 'साध्यगीत' का निराशा का स्वर नहीं दीख पड़ता। प्रकृति के तादात्म्य में कवि ने अपनी महान आशावादिता का परिचय दिया है।

सन् १८९० में उनकी कवितायें 'मनासी' तथा 'सोनार तरीं' प्रकाशित हुई। 'चित्रा', 'नैवेद्य', 'कनिका'', 'कल्पना' जैसी पुस्तकें भी इस काल की देन हैं। १९०१ में उनकी जगत-प्रसिद्ध 'गीताजलि' का प्रकाशन हुआ। सन् १९११ में आपने 'जनगण मन अधिनायक' शीर्षक गीत लिखा जिसे स्वतंत्र भारत में राष्ट्रगीत के रूप में मान्य किया गया। सन् १९१३ में 'नोबेल पुरस्कार' प्राप्ति के साथ ही उनकी बहुमुखी प्रतिभा का प्रकाश सारे संसार में फैल गया।

टैगोर जन्मजात कवि थे। बचपन से ही उनकी सौंदर्यानुभूति अत्यन्त प्रखर थी। प्रकृति की ओर उनके आकर्षण का भी कारण यही था। टैगोर की प्रारंभिक कविताओं में इसी प्रकार के सौंदर्य-बोध-का परिचय मिलता है। बचपन में आर्जित धार्मिक भावनाओं की प्रतिछाया उनके काव्य में दृष्टिगोचर होती है। वास्तव में टैगोर के काव्य का धार्मिक पक्ष भारत की उस परंपरा से जोड़ा जाना चाहिए जिसने उपनिषद् जैसी महान कृतियों को जन्म दिया था। टैगोर के सम्मुख कालिदास का सौदर्य-बोध, तुलसी की भक्ति और कबीर की रहस्यवाद की एक ऐसी परम्परा थी जिसने उनको एक 'महाकवी' की उपाधि के योग्य बना दिया।

उनके काव्य का दूसरा सशक्त पक्ष है उनका प्रकृति-प्रेम। इस दिशा में वे महान दार्शनिक रामानुज से प्रभावित जान पड़ते है। उनको प्रतीत होता है कि संपूर्ण नैसर्गिक जगत् में व्याप्त सौंदर्य एक ही प्रकाश-पुंज से निस्तृत होकर सारे जगत् को आलोकित कर रहा है।

प्रकृति की सुन्दरता भौतिक जगत की सुन्दरता नहीं है। इसके अन्दर एक ऐसा शक्ति विद्यमान है जो इसको वास्तविक स्वरूप प्रदान करती है। इस अर्थ में टैगोर अंग्रेज़ी के महान कवि वर्डसवर्थ के काफी निकट प्रतीत होते हैं। अंग्रेज़ी आलोचना में इस प्रवृत्ति को 'पौन्थेइज़्म' की संज्ञा दी गई है। टैगोर की कविता में 'पैन्थेइज़्म' है या नहीं, यह बात तो विवादास्पद हो सकती है, किन्तु जब हम इसी प्रवृत्ति के दर्शन रामानुज के विशिष्टाद्वैदवाद में करते हैं तो हमें टैगोर और वड्र्सवर्थ की कविता में गहरी समानता दृष्टिगोचर होती है। वे अपनी विचारधारा में भी और अपने काव्य में भी एक मानवतावादी के रूप में उपस्थिति होती

कविगुरु रवीन्द्रनाथ और हिन्दी साहित्य

सिन्दू बी.ऐ.

हिन्दी भाषा और साहित्य के संबंध में कविगुरु रवीन्द्रनाथ के विचार सौहार्दपूर्ण रहे हैं। वे हिन्दी के समर्थक थे तथा सदैव उनकी यह इच्छा रहा करती थी कि मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य के अनुरूप आधुनिक हिन्दी साहित्य भी समृद्ध हो। रवीन्द्रनाथ इस युग के केवल श्रेष्ठ कवि ही नहीं थे, महान तत्वदृष्टा और विचारक भी थे। उनकी कविताएँ, गान, नाटक, उपन्यास, कहानियां, निबंध और आलोचनाएं भारतीय मनीषा की अत्यंत समृद्ध देन हैं।

रवीन्द्रनाथ को पूर्ण विश्वास था कि हिन्दी साहित्य एक दिन अवश्य काफी प्रगति करेगा, क्योंकि इसी साहित्य ने एक दिन सोने की फसल दी थी। मध्ययुगीन हिन्दी साहित्य को उन्होंने सोने की फसल कहा है।

कविगुरु रवीन्द्रनाथ का उदय जिस समय हुआ, भारत पर अंग्रेज़ों का राजनीतिक प्रभुत्व अथवा औद्योगिक आधिपत्य ही नहीं, उनके साहित्य और संस्कृत की महिमा भी हमारे देश के शिक्षित-वर्ग पर बुरी-तरह हावी होती जा रही थी। कोई भी समाज और साहित्य इसके प्रभाव से अछूता नहीं बचा था। हिन्दी में रवीन्द्रनाथ के उपन्यासों, नाटकों और कहानियों आदि के अनुवाद काफी मात्रा में हुए हैं। परंतु इन साहित्यांगों में रवीन्द्रनाथ की स्वकीयता इतनी अधिक मात्रा में है कि इनका अनुकरण होना कठिन है। जिन दिनों रवीन्द्रनाथ का साहित्य हिन्दी में आया उन दिनों हिन्दी का साहित्यकार काफी समर्थ हो चुका था। उन्होंने रवीन्द्रनाथ के साहित्य में मिलनेवाली प्रेरणा को वे स्वस्थ भाव से ग्रहण कर सके। रवीन्द्रनाथ का भारतीय साहित्य को सबसे बडा दान यही है कि उन्होंने इसकी स्वकीयता को उकसाया और बल दिया।

महाकवि रवीन्द्र ने विविध क्षेत्रों में छिटपुट लेख भी लिखे जिनका महत्व भी कम नहीं। 'साहित्य का तात्पर्य' कवीन्द्र का स्थायी महत्व का लेख है जिसमें शाश्वत मूल्यों को उठाया गया है। 'विश्व-साहित्य' में महाकवि रवीन्द्र ने विस्तृत फलक पर साहित्य को देखने की चेष्टा की है। एक प्रकार से जहाँ लेखक ने अपनी भावनाओं को समग्र मनुष्यों के भावों को अनुभव किया है।

उन्होंने इस धरती को इसके लाख-लाख सुख-दुःख की धाराओं के साथ प्रेम करने की दृष्टि दी है। जड़त के संचय को उन्होंने समस्त विकारों के मूल में पाया है। हमारे भीतर वही चैतन्य है, वही मंगलमय है। उसकी उपेक्षा से ही हमारी आधुनिक सभ्यता आँख मूँद कर विनाश की ओर बढ़ रही है। रवीन्द्रनाथ के इस संदेह ने देश के कवियों को नई दृष्टि दी है। हमारे साहित्यकार ने इस मंत्र को अपने अपने ढंग से ग्रहण किया है।

गीतांजली के अंग्रेज़ी और फिर हिन्दी अनुवादों ने हिन्दी में उस सुकुमार गद्य-शैली को प्रेरणा दी, जो आगे चलकर गद्य-काव्य का नाट्य-काव्य कहलाया रवीन्द्रनाथ के लगभग ५० ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद हो चुका है। हिन्दी-भाषा के लचीलेपन पर गुरुदेव मुग्ध थे और 'आँख की किरकिरी' के नाम से हुए चोखे-बालि के अनुवाद की उन्होंने बडी प्रशंसा की थी। 'कुमुदिनी' का अनुवाद भी उन्हें बहुत पसंद आया था।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर....

हैं। उनके इसी पक्ष को देखकर गांधीजी ने उनको 'गुरुदेव' की उपाधि से विभूषित किया था। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' ही उनके मतानुसार एकमात्र सत्य है। इस प्रकार टैगोर के सौंदर्य-बोध की अंतिम परिणति मानवतावाद है। इसी अर्थ में सारे विश्व ने टैगोर को भारत के सांस्कृतिक दूत (Cultural ambassador) के रूप में देखा। वास्तव में वे भारत की सांस्कृतिक आत्मा के अनन्य गायक थे। यही उनकी कविता का सच्चा अर्थ है। इसी अर्थ में वे विश्व-कवि के रूप में जाने जाते हैं। अंत में मैं यह कहना चाहती हूँ कि-

'विश्व लेखनी का बना जो खुद नव इतिहास
भारत ने युग को दिया ऐसा रवीन्द्र विलास।'

शोध छात्रा, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनन्तपुरम

भारतीय नवोत्थान और रवीन्द्रनाथ टैगोर

निमिषा जी. पिल्लै

"हे रसशेखर कवि, तव जन्मदिने
आकि कोये जावो मोर नव जन्मकथा
आनन्द सुंदर तवो मधुर परशे
अग्निगिरी गिरि-मल्लिकार फूले-फूले
छेये गेछे।"

अर्थात् हे रसशेखर कवि! तुम्हारे जन्म दिन पर मैं एक नवनवोन्मेष जन्मकथा कहता जाऊँगा। तुम्हारे आनन्द के सुंदर मधुर से पहाड़ी मल्लिका के हर फल-फल में ज्योतिर्मय ऊष्मा दीप्तिमान हो उठी है।

यहाँ 'रसशेखर कवि', विश्व-विख्यात साहित्यकार, कवि, एक समाज सुधारक, देश-भक्त और सबसे ऊपर एक महान मानवतावादी और दार्शनिक तथा साहित्य के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर है, जिन्होंने साहित्य एवं समाज केलिए एक ऐसी विशिष्ट देन दी है जो अतीत की श्रद्धा, वर्तमान का विश्वास और भविष्य के गौरव का मूर्तिमान प्रतीक है। टैगोर ने बंगला साहित्य के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नयी जान फूंक दी। संसार के महान विभूतियाँ किसी एक देश अथवा जाति के नहीं होते। यद्यपि वह किसी एक देश तथा जाति में जन्म लेते हैं, परंतु उनके क्रियाकलाप समस्त मानव-जाति को प्रभावित करते हैं। रवीन्द्रनाथ टैगोर ऐसी ही एक प्रतिभा थे। वे केवल भारत के नहीं सारे संसार के कवि हैं, विश्व-मानव के कवि, 'कविता कवितमः'। टैगोर उन विरल साहित्यकारों में से एक हैं, जिनके साहित्य और व्यक्तित्व में अद्‌भुत साम्य है। अपनी कल्पना को जीवन के सब क्षेत्रों में अनंत अवतार देने की क्षमता रवीन्द्रनाथ टैगोर की ख़ास विशेषता थी।

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म देवेन्द्रनाथ टैगोर और शारदा देवी के संतान के रूप में ७ मई १८६१ को कोलकत्ता के जोडासाँको ठाकुरवाडी में हुआ था। बचपन से ही इनकी कविता, छंद और भाषा में अद्‌भुत प्रतिभा का आभास लोगों को मिलने लगा। उन्होंने पहली कविता आठ साल की उम्र में लिखी थी और १८७७ में केवल सोलह साल का उम्र में उनकी लघुकथा प्रकाशित हुई थी। भारतीय सांस्कृतिक चेतना में नई जान फूँकने वाले युगदृष्टा टैगोर के सृजन संसार में 'गीतांजलि', पूरबी, प्रवाहिनी, शिशु भोलानाथ, महुआ, वनवाणी, परिशेष, वीथिका, शेषलेखा, क्षणिका आदि शामिल हैं। उनकी काव्य रचना गीतांजली केलिए उन्हें सन् १९१३ का नोबेल पुरस्कार मिला। टेगोर एशिया के प्रथम नोबेल पुरस्कृत व्यक्ति है। उनकी 'काबूलीवाला', 'मास्टर साहब' और 'पोस्टमास्टर' कहानियाँ आज भी लोकप्रिय कहानियाँ है। उनकी कहानियाँ सर्वश्रेष्ठ होते हुए भी लोकप्रिय हैं और लोकप्रिय होते हुए भी सर्वश्रेष्ठ हैं। टैगोर केवल कवि या कथाकार ही नहीं, उपन्यासकार, नाटककार, निबंधकार और चित्रकार भी हैं। ये एकमात्र कवि है, जिनकी रचनाएँ दो देशों में राष्ट्रगान के स्वरूप आज भी गाई जाती हैं। भारत का राष्ट्रगान 'जन गण मन' और बाँगलादेश का राष्ट्रीय गान 'आमर सोनार बाँगला' गुरुदेव की ही रचनाएँ है। टैगोर ने करीब २,२३० गीतों की रचना की है।

आज जब भविष्य की पीढ़ियाँ उन्हें श्रद्धांजलि देकर उनकी महत्ता बढ़ाने का प्रयत्न कर रहे हैं, इसकी उन्हें कोई ज़रूरत नहीं। उनका स्मरण कर हम स्वयं ही गौरव-लाभ करते हैं, और जो महान छाती उन्होंने हमें सौंपी है, उसके भागी बनते हैं। इस शताब्दी समारोह के अवसर पर अर्थात् कवि के जन्म के १५० वर्ष के बाद भी उनकी प्रतिभा-प्रदीप सौ गुना उज्ज्वल हो आज भी हमारे बीच प्रकाश विकीर्ण कर रहा है और विश्वव्यापी अंधकार को भेदकर

यद्यपि कवि ने हिन्दी का कोई विधिवत् अध्ययन नहीं किया था, तथापि वे हिन्दी में छपी चीज़ें भलीभांति पढ़ और समझ लेते थे। वे हिन्दी के लेखकों और कवियों से मिलने को बडे उत्सुक रहते थे और उन्हें प्रायः शांतिनिकेतन बुलवाया करते थे। प्रेमचंदजी से मिलने को तो वे विशेष रूप से बडे उत्सुक थे, पर दुर्भाग्यवश यह भेंट कभी हो ही नहीं सकी।

इस प्रकार हिन्दी जगत को गुरुदेव और उनकी रचनाओं से जो प्रेरणा, प्रभाव एवं प्रोत्साहन मिले हैं, उसकेलिए हिन्दी वाले गुरुदेव के चिरकृतज्ञ रहेंगे।

शोध छात्रा, एम.जि.कालेज, त्रिवेन्द्रम।

रवीन्द्रनाथ टैगोर का प्रकृति-बोध

राजेन्द्र परदेसी

भारतीय साहित्य में ही नहीं, विश्व वाङ्मय के सुविस्तृत फलक पर भारतीय गौरव के प्रतीक कवीन्द्र रवीन्द्र की यशोगाथा प्रकाश स्तम्भ की भंति सम्प्रतिष्ठित है। उसका प्रकाश यथावत उज्वल है। भारतीय संस्कृति का स्वरूप प्रारम्भ से ही समन्वयात्मक रहा है। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी कविता 'भारत-तीर्थ' में बडे मर्मस्पर्शी ढंग से उसका वर्णन किया है, कि किस प्रकार भारत में विभिन्न जातियाँ आई और यहाँ के महामानव सागर में घुल गई। भारतीय संस्कृति का जो समन्वयात्मक स्वरूप उनके भाव जगत में उतरकर भारत-तीर्थ मे व्यक्त हुआ। उसी को उन्होंने अपने प्रसिद्ध निबंध -'काव्यांतर' में तर्क और प्रमाण द्वारा प्रतिपादित किया है। प्रसिद्ध विचारक, दार्शनिक, एवं नोबल पुरस्कार विजेता रोम्याशीला ने वर्षी पूर्व इसी संदर्भ में कहा है - 'सिन्धु और गंगा की तरह भारत की दो महान नदियां हैं, गाँधी और रवीन्द्रनाथ टैगोर, हिंसा के हल से सत-विसत संसार की मिट्टी पर गांधी और टैगोर दो ईश्वरीय नदियों की तरह प्रवाहित हो रहे हैं।'

प्रकृतिबोध के कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी रचनावली की भूमिका में लिखा है - 'मेरे जीवन में उस समय सुख-दुःख के स्वर से युक्त मनुष्य की जीवन धारा का विचित्र कलरव शुरू हो गया था। मनुष्य का परिचय बहुत नज़दीक से मेरे मन को छू रहा था। संकल्प करने लगा था। उस संकल्प के सूत्र आज भी मेरे जीवन से विच्छिन्न नहीं हुए हैं - आज भी मेरा हृदय मानव-हृदय के साथ मिलने के लिए रोता रहता है।'

ऐसे महाकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर से साक्षात्कार करने के बाद महादेवी वर्मा ने अपने संस्मरणात्मक निबंध 'प्रणाम' में विश्वकवि के ज्योतिर्मयी आँखों और उनकी पैनी तथा आत्मीय दृष्टि का चित्रण करते हुए लिखती है - कुछ उजली भृकुटियों की छाया में चमकती हुई आँखें देखकर हिमरेखा से घिरे अथाह नील जल कुण्डों का संस्मरण हो आना ही सम्भव था दृष्टि पथ की बाह्य सीमा छूते ही वे जीवन के रहस्य-कोष सी आँखों एक स्पर्श मधुर सरसता रशि-रशि बरसा देती थी, अवश्य, परन्तु उस परिधि के भीतर पैर धरते ही वह सहज आमंत्रण दुर्लभ सीमा बनकर हमारे अन्तरतम का परिचय पूछने लगता था। पुतलियों की श्यामलता से आती हुई रश्मि-रेखा जैसी दृष्टि से हमारे हृदय का निगूढ़तम परिचय न छिपा सकता था और न बहुरूपिया बन पाता था।

सन् १९१३ में जब टैगोर को नोबल पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया तब ब्रिटीश सरकार ने भी उन्हें 'सर' की उपाधि देने की घोषणा की। उन्हीं दिनों जालियांवाला बाग की शर्मनाक घटना घटी। जब कई निर्दोष भारतीयों की नृशंस हत्या अंग्रेज़ों द्वारा की गई। उस शर्मनाक घटना से द्रवित होकर टैगोर ने 'सर' की उपाधि अंग्रेज़ सरकार को वापस कर दी।

रवीन्द्रनाथ टैगोर मात्र प्रकृति बोध के ही कवि नहीं थे वे एक राष्ट्रवादी कवि भी थे। भारतमाता को गुलामी से मुक्त कराने के लिए छटपटा भी रहे थे। 'एक बार फिराओ मेर' कविता में उनकी छटपटाहट स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। वह कल्पना करते हैं कि भारतमाता सहार भांग रही है।

टैगोर बंगला के कवि भले ही हों, पर पूरे भारत के पाढकों ने उन्हें अपना कवि माना है। नेहरू उनके संबंध - में कहा है कि उनके दो गुरु हैं - गाँधी और रवीन्द्रनाथ। उस बात के प्रमाण हैं कि उन्हें सिर्फ साहित्यिक नहीं एक सांस्कृतिक पुरुष के रूप में सम्मान दिया गया है।

अंत में यही कहूँगा कि रवीन्द्रजी का हृदय उतना विशाल है कि वृत्तियों का द्वार उन्मुक्त होकर खुल गया है। जिसमें सारा विश्व समा गया है। यह है विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के चिन्तन का विराट रूप।

४४, शिव विहार, फरीदी नगर, लखनऊ-२२६०१५

उसका अद्‌भुत आलोक आनेवाले अनगिन युगों तक मार्गदर्शन करता रहेगा।

ग्रंथ सूचि:

(१) रवीन्द्रनाथ टैगोर, प्राणनाथ वानप्रस्थी
(२) मानवता के उन्नायक, डॉ.राधाकृष्णन

शोध छात्र, यूनिवेर्सिटी कालेज, तिरुवनन्तपुरम

समीक्षार्थ प्राप्त पुस्तकें :

(१) श्रीमती वंन्दना सक्सेना

मध्यप्रदेश के भोपाल में जन्में श्रीमती वंदना सक्सेना की निम्नलिखित पठनीय पुस्तकें समीश्रार्ध प्राप्त हुई हैं। श्रीमती वंदना साहित्य की विविध विधाओं में अपनी समर्थ लेखनी चलायी है। अनेक पुरस्कार भी उन्हें प्राप्त हुई है। हिन्दी साहित्य में कबीर बहुचर्चित महापुरुष है। उनके जीवन-दर्शन और विचारों के अनेक ग्रन्थ प्राप्त हैं। यहाँ श्रीमती वंदना ने भी ऐसे एक महापुरुष को अपनी दृष्टि में देखा है। ग्रन्थ पठनीय एवं सचेतन है।

श्रीमती वंदना सक्सेना का एक दूसरा ग्रन्थ है जीवन की पगडंडियाँ। इस पुस्तक में कवयित्री वंदना सक्सेना ने अपने जीवन की विकट यात्रा में आयी हुई विभीषिकाओं और उनके सधीर समाधानों का अनेक संदर्भों के साथ वर्णन किया है। एक अनुभवी जीवन के असाधारण चित्रण इस ग्रंथ में समाहित हैं जो साहित्यिक यात्रावलंबियों के लिए मार्गदर्शक हैं।

२. श्री. टी.सी.गोयल

श्री.टी.सी. गोयल द्वारा रचित 'दनकौर से लखनऊ तक' संज्ञक ग्रंथ का षष्टम संस्करण (२०१२ में प्रकाशित) हमें प्राप्त है। यह भारत भर के विशिष्ट साहित्यिक व्यक्तियों तक पहुँचा हुआ एक असाधारण ग्रंथ है। डॉ. गोयल अप्रैल १९६६ में किंग जार्ज मेडिकल कालेज में सरजरी में लेक्चरर के पद पर नियुक्त हुए, १९७४ में रीड़र हुए और १९८६ में प्रोफसर नियुक्त हुए, तथा ३० जून १९९९ को सेवानिवृत्त हुए। श्री. गोयल भारत की असंख्य संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत हुए हैं। प्रस्तुत पुस्तक एक समर्थ लेखक के चिंतन का परिणाम है, इसमें मानव जीवन के साथ ही प्रकृति के नैसर्गिक विवरण, मानव शरीर के अनेक अंग-प्रत्यंगों का पठन, भारत विशिष्ट और दर्शनीय स्थानों का परिचय, सर्वतोगत्वा जीवन के समग्र चित्रों का वर्णन प्राप्त है।

३. डॉ. एम. शेषन

प्रख्यात तमिल भाषी हिन्दी ग्रन्थकार डॉ.एम. शेषन के तीन ग्रंथः

(१) तमिल साहित्य : एक परिदृश्य

(२) समकालीन तमिल कहानियाँ

(३) तमिल-हिन्दी श्रृंगार काव्य तुलना

श्री.एम. शेषन जी तमिलनाडु के सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार है। आपके अनेक हिन्दी ग्रंन्थ पठनीय एवं पुरस्कृत हुए हैं। गैर तमिल भाषिकों के तमिल भाषा, उसके साहित्य की महत्ता एव संस्कृति की गरिमा का ज्ञान कराना लेखक का मुख्य लक्ष्य है। इस दृष्टि में उनके ग्रंथों का मूल्य अखिल भारतीय स्थल पर गणनीय है। श्री. शेषन के सत् प्रयास से द्राविड़ परिवार की तमिल भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर जाने का महत्वपूर्ण स्थान इनको प्राप्त है।

तमिल भाषा में अनगिनत सुन्दर कहानियाँ रची हुई है। इन कहानियों की परंपरा सवा सौ वर्षों की पुरानी मानी जाती है। आज भारतीय भाषाओं के कहानी साहित्य का समकक्ष इसी के साथ गिनता पड़ता है। इस दृष्टि में समकालीन तमिल कहानियाँ संज्ञक यह ग्रन्थ अतीव पठनीय एवं संरक्षण योग्य है।

तीसरा ग्रन्थ 'तमिल-हिन्दी श्रृंगार काव्य तुलना' उसकी विषय वस्तु, पात्र, परिकल्पना, काव्य शिल्प आदि अनेक दृष्टियों से यह साबित करने का प्रयास कि जिस प्रकार भारतीय भक्ति के संदर्भ में तमिल की चर्चा करने की अनिवार्यता होती है उसी प्रकार श्रृंगार के श्रोत की चर्चा में तमिल संगम साहित्य की चर्चा की आवश्यकता है। वस्तुतः प्रस्तुत रचना भारतीय चिन्तन की नवीन संभावनावों और दिशाओं की ओर प्रकाश डालती है। •

भविष्य को बनाना चाहते हैं?

आप पढ़िए एक आत्मकथा!

"അനന്തപുരിയും ഞാനും"

ഈ ഗ്രന്ഥത്തിന്റെ തർജ്ജമ

एक कर्मयोगी की आत्मकथा

भारतः स्वतंन्त्रता के रास्ते से

डॉ.एन.चन्द्रशेखरन नायर का नवति पर्व एरनाकुलम रामकृष्ण आश्रम में आचरित हुआ १५ मार्च २०१४ में। चित्र में उद्घाटन किया जस्टिस हरिहरन नायर, अध्यक्ष मुख्य अतिथि जस्टिस आर. भास्करन, प्रोफ.एन.जी.देवकी, प्रोफ.टि.जे.विश्वमभरन, प्रोफ.तम्पी, के.एम.नासर आदि।

जस्टिस के.पी. राधाकृष्ण मेनन स्मारक नेशनल पुरस्कार डॉ.नायर, जस्टिस वी.आर. कृष्णअय्यर से स्वीकार करते हैं। चित्र में वी.आर.कृष्णय्यर, केन्द्रमंत्री के .वी.तोमस, डॉ.नायरजी, जस्टिस जे.बी.कोशी आदि

सुप्रसिद्ध कलाकारी श्रीमती आशा शरत् के साथ नायरजी और पत्नी शारदा।

डॉ.नायरजी का नवति आचरण २४-१२-२०१३ को केरल हिन्दी साहित्य अकादमी भवन में किया गया। जस्टिस एम.आर.हरिहरन नायरजी ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। चित्रमें अम्बासडर टी.पी. श्रीनिवासनजी, श्री वासुदेवशर्मा (मुख्यमंत्री का पोलिटिकल सेकटरी), अकादमी सेकटरी राजपुष्पम आदि।

नवति आचरण के सन्दर्भ में प्रोफसर पं.बन्ने द्वारा रचित ग्रंथ डॉ. नायरजी की रचना की सांस्कृतिक चेतना का प्रकाशन प्रसिद्ध गान्धिवादी नेता श्री.पी. गोपिनाथन नायरजी, डॉ.एस.तंकमणि अम्मा को ग्रंथ की प्रति देते हुए करते हैं।

नवति आचरण के सन्दर्भ में डॉ. नायर द्वारा रचित चित्र चाचा नेहरू का अनावरण प्रख्यात चित्रकार प्राचार्य काटूर नारायण पिल्लै जी ने किया। चित्र में श्री. काटूर, अंबासडर टी.पी. आदि

नवति आचरण में अम्बासडर श्री.टी.पी.श्रीनिवासन जी डॉ.नायरजी को अंगवस्त्र पहनाते हैं।

नवति आचरण के सन्दर्भ में प्रसिद्ध प्रोफसर पं. बन्ने जी को जस्टिस अवार्ड देते हैं।

नवति आचरण के सन्दर्भ में सौ वर्ष के सर्वादरित प्रख्यात अड्वकेट श्री. अय्यप्पन पिल्लै जी नायर जी को अंगवस्त्र पहनाते हैं। पीछे प्रसिद्ध एन.एस.एस. नेता श्री.संगीतकुमार

नवति आचरण में श्री. वासुदेव शर्मा (मुख्यमंत्री के पोलिटिकल सेक्रटरी और मेरे प्रिय शिष्य) आशंसा भाषण करते हैं।

नवति आचरण में प्रसिद्ध प्रोफसर डॉ.टी.पी.शंकरनकुट्टि नायर, नायरजी को अपनी संस्था के प्रतीक चिन्ह पहनाकर आदर करते हैं।

प्रसिद्ध गाँधीवादी नेता श्री.पी.गोपीनाथन नायर जी को डॉ.नायर जी विशेष आदर सूचक मंगल-पत्र प्रदान करते हैं। पीछे डॉ.नायर जी द्वारा रचित चाचा नेहरू का तैल-चित्र।

डॉ. नायर जी की सुपुत्री श्रीमती सुनन्दा (गुडगाव में पी. आई इंडस्ट्री की अफसर) कृतज्ञता भाषण करती है।

वी.जे.टी. हाल में सम्पन्न हिन्दी महासम्मेलन में पधारे विशिष्ट सदस्यों का सम्मान करते हैं संस्कृति मंत्री।

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के लिए शोध-पत्रिका डा.एन. चन्द्रशेखरन नायर, श्री निकेतन, तिरुवनन्तपुरम - ४
द्वारा मुद्रित संपादित और श्रीरामदासमिशन प्रिंटिंग एण्ड पब्लिशिंग हाऊस, तिरुवनन्तपुरम-८७ में मुद्रित।